जनवरी-2013 ◆ वर्ष 1 ◆ अंक 8 ◆ उदयपुर

ओ३म्

सत्यार्थ-सौरभ

जनवरी-२०१३

सौरभ बिखरा
दिग्दिगन्त में
नील गगन घन में

शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति को समर्पित

श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास

नवलखा महल परिसर, गुलाब बाग, महर्षि दयानन्द मार्ग,
उदयपुर-313001 (राज.)

₹ १० १२

श्रम करके संध्या को घर में, अपने बिस्तर पर आया था !
उस दिन ना जाने क्यों मैंने, मन में भारीपन पाया था !!
जब आँख लगी तो सपने में लहराता तिरंगा देखा था !
राष्ट्र ध्वजा को गोद लिए, भारत माँ का बेटा था !!
जयहिंद का नारा बोल बोल के आकर वह चिल्लाये थे !
उस रात स्वयं बाबू सुभाष, मेरे सपने में आये थे !!
बोले भारत भूमि में जन्मा है, तू कलंक क्यों लगाता है !
राग द्वेष की बातों पर, क्यों अपनी कलम चलाता है !!
इन बातों पर तू कविता लिख, मैं विषय तुम्हें बतलाता हूँ !
वर्तमान के भारत की मैं, झाँकी तुझे दिखाता हूँ !!
हमने पूनम के चंदा को राहू को निगलते देखा है !
हमने शीतल सरिता के पानी को उबलते देखा है !!
गद्दारों की लाशों को चन्दन से जलते देखा है !
भारत माता के लालों को शोलों पर चलते देखा है !!
देश-भक्त की बाहों में सर्पों को पलते देखा है !
हमने गिरगिट सा इंसानों को रंग बदलते देखा है !!
जो कई महीनों से नहीं जला हमने वो चूल्हा देखा है !
हमने गरीब की बेटी को फाँसी पर झूला देखा है !!
हमने दहेज़ बिन ब्याही बहुओं को रोते देखा है !
मजबूर पिता को गर्दन बल पटरी पर सोते देखा है !!
देश द्रोही गद्दारों के चहरे पर लाली देखी है !

हमने रक्षा के सौदों में होती हुई दलाली देखी है !!
खादी के कपड़ों के भीतर हमने दिल काला देखा है !
इन सब नमक हरामों का,शेयर घोटाला देखा है !!
हमने तंदूर में नारी को रोटी सा सिकते देखा है !
लाल किले के पिछवाड़े, अबला को बिकते देखा है !!
राष्ट्रपिता की प्रतिमा पर, मकड़ी का जाला देखा है !
जनपद वाली बस्ती में हमने कांड हवाला देखा है !!
आतंकवाद के कदमों को इस हद तक बढ़ते देखा है !
अमरनाथ में शिव भक्तों को हमने मरते देखा है !!
होटल ताज के द्वारे, उस घटना को घटते देखा है !
माँ गंगा की महाआरती में, बम फटते देखा है !!
हमने अफजल की फाँसी में संसद को सोते देखा है !
जो संसद पर बलिदान हुए, उनका घर रोते देखा है !!
उन सात पदों के सूरज को भारत में ढलते देखा है !
नक्सलवाद की ज्वाला में, देश को जलते देखा है !!
आजादी के दिन दिल्ली,बन गई दुल्हनिया देखी है !
१५ अगस्त के दिन भोलू की भूखी मुनिया देखी है !
हमने संसद के अन्दर राष्ट्र की भ्रष्टाचारी देखी है !
हमने देश के साथ स्वयं, होती गद्दारी देखी है !!
ये सारी बातें सपने में नेता जी कहते जाते थे !
उनकी आँखों से झर झर आँसू भी बहते जाते थे !!
बोले जा बेटे भारत माता के,अब तू सोते लाल जगा !

आभार- विनायक वास्तु.कॉम

आएँ इस गणतंत्र दिवस के पावन अवसर पर हम अपने गणतंत्र को सुराज्य बनाने हेतु संकल्पित हों ।

सत्यार्थ प्रकाश की शिक्षाओं को अपने आँचल में समेटे, सम्पूर्ण परिवार के लिए, हर आयु समूह के लिए, पठनीय और समर्पित

न्यास का मासिक मुखपत्र

सत्यार्थ – सौरभ

प्रमुख संरक्षक – सत्यार्थ–सौरभ

महाशय धर्मपाल जी (एम.डी.एच.)
डॉ. सुखदेव चन्द सोनी (अमेरिका)

परामर्शदाता संपादक मण्डल

डॉ. महावीर मीमांसक
आचार्य वेदप्रकाश श्रोत्रिय
डॉ. ज्वलंत कुमार शास्त्री
डॉ.सोमदेव शास्त्री
डॉ. रघुवीर वेदालंकार
आचार्य वेदप्रिय शास्त्री

संपादक

अशोक आर्य

प्रबन्ध सम्पादक

भवानी दास आर्य

कम्पयूटर एवं ग्राफिक्स

नवनीत आर्य

व्यवस्थापक

सुरेश पाटोदी (मो.9829063110)

सहयोग ◆ भारत	विदेश
संरक्षक – ११००० रु.	$ 1000
आजीवन – १००० रु.	$ 250
पंचवर्षीय – ४०० रु.	$ 100
वार्षिक – १०० रु.	$ 25
एक प्रति – १० रु.	$ 5

भुगतान राशि धनादेश/चैक/ड्राफ्ट
श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास
के पक्ष में बना न्यास के पते पर भेजें।
अथवा यूनियन बैंक ऑफ इण्डिया, उदयपुर
खाता संख्या : ३१०१०२०१००४१५१८
IFSC CODE- UBIN 0531014
में जमा करा अवश्य सूचित करें।

सृष्टि संवत्
१९६०८५३११३
पौष कृष्ण दशमी
विक्रम संवत्
२०६९
दयानन्दाब्द
१८८

सत्यार्थ–सौरभ में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार सम्बन्धित लेखक के हैं। सम्पादक अथवा प्रकाशक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है। किसी भी विवाद के प्रतिवाद हेतु न्यायक्षेत्र उदयपुर ही होगा। आपत्ति की अवधि प्रकाशन तिथि से एक माह के भीतर ही मानी जायेगी।

January - 2013

विज्ञापन शुल्क (प्रति अंक)

कवर २ व ३ (भीतरी आवरण) रंगीन
३५०० रु.

अन्दर पृष्ठ (श्वेत-श्याम)

पूरा पृष्ठ (श्वेत-श्याम)	२००० रु.
आधा पृष्ठ (श्वेत-श्याम)	१००० रु.
चौथाई पृष्ठ (श्वेत-श्याम)	७५० रु.

दुहितृ से डॉटर तक

१२

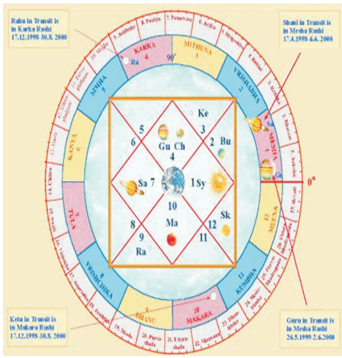

२३

अन्धविश्वास-जी का जंजाल

कुण्डली–पुत्र

०९

नमन

२६

	०४	प्रमुख संरक्षक की कलम से.....
	०५	वेद सुधा
समाचार २१	१४	किस अपराध की सजा है गरीबी
	१६	मकर संक्रान्ति
	१८	वैदिक त्रैतवाद
हलचल २२	२७	Dayanand the World Teacher
	२६	स्वास्थ्य
	३०	बाल वाटिका

स्वामी श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास
नवलखा महल, गुलाब बाग, उदयपुर

वर्ष – १ अंक – ८

द्वारा – चौधरी ऑफसेट, (प्रा.लि.)
११-१२, गुरु रामदास कॉलोनी, उदयपुर **मुद्रण**

प्रकाशक

श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास
नवलखा महल, गुलाब बाग, उदयपुर (राजस्थान) ३१३००१
(०२९४) २४१७६९४ , ९३१४५३५३७९, ९८२८९२६७४७
www.satyarthprakashnyas.org, E-mail : satyarthsandesh@gmail.com

स्वत्वाधिकारी, श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, उदयपुर की ओर से प्रकाशक, मुद्रक अशोक कुमार आर्य द्वारा चौधरी ऑफसेट प्रा. लि., 11/12 गुरुरामदास कॉलोनी, उदयपुर से मुद्रित तथा कार्यालय श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास नवलखा महल गुलाबबाग, महर्षि दयानन्द मार्ग, उदयपुर-313001 से प्रकाशित, सम्पादक-अशोक कुमार आर्य

प्रमुख संरक्षक की कलम से ....

हमारे कृपालु पाठक गण,
सादर नमस्ते।

आज सत्यार्थ-सौरभ के प्रकाशन को एक वर्ष होने जा रहा है। आपके हाथों में अब तक १२ अंक पहुँच चुके तथा इस पत्रिका को लेकर न्यास की जो सोच है, पाठकों तक जिस प्रकार की सामग्री हम पहुँचाना चाहते हैं, वह अब तक आपके समक्ष स्पष्ट हो गयी होगी। उत्तम कागज, उत्तम गेटअप, उत्तम छपाई के साथ-साथ उत्कृष्ट सामग्री इस सोच को ध्यान में रख प्रस्तुत की जा रही है कि यह पत्रिका आर्यसमाजी परिवारों से भिन्न परिवारों में, पुरुषों के साथ महिलाओं में, बुजुर्गों के साथ बच्चों में भी अपना स्थान बना सके। वैदिक संस्कृति के उत्कृष्ट तत्त्वों के प्रगटन के साथ-साथ समसामयिक समस्याओं पर भी वैदिक-संस्कृति के परिप्रेक्ष्य में दिशा दे सके। मुझे निश्चय है कि आपने एक "different flavour" का रसास्वादन अवश्य किया होगा।

सत्यार्थ-प्रकाशस्थ महर्षिवर की शिक्षाओं को अन्तिम पृष्ठ पर अत्यन्त आकर्षक रूप से प्रस्तुत किया जा रहा है जो पत्रिका सम्पादक श्री अशोक आर्य की विस्तृत कल्पनाशक्ति मिश्रित प्रौढ़ सोच का परिचायक है। न्यास को पत्रों द्वारा, उससे भी कहीं ज्यादा दूरभाष द्वारा, प्रशंसा के उत्साहवर्धक संदेश निरन्तर प्राप्त हो रहे हैं। कहा जा सकता है कि विविध विषयों पर सामग्री प्रस्तुतीकरण द्वारा पत्रिका-ध्येय वाक्य-'**शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति को समर्पित**' को सार्थक कर रही प्रतीत होती है।

अति उत्साही पाठकों ने तो पूरी पत्रिका रंगीन छापने का सुझाव दिया है। परन्तु वर्तमान में संसाधनों की कमी के कारण यह सम्भव नहीं हो सकेगा। आपको आश्चर्य होगा कि बिना एक भी नवीन नियुक्ति के पत्रिका न्यास के वर्तमान स्टाफ के उत्साहित सहयोग से न केवल निरन्तर निकल रही है वरन् प्रत्येक माह की ७ तारीख को डिस्पैच हो रही है। अतः अभी तो पूरी रंगीन पत्रिका छापना अथवा पृष्ठ संख्या-वृद्धि करना सम्भव नहीं है परन्तु यह भी है कि असम्भव शब्द हमारे शब्दकोष में नहीं है। जैसे-जैसे पत्रिका की प्रसार संख्या बढ़ेगी, दानी महानुभावों का ध्यान इस महत्वपूर्ण विषय की ओर आकर्षित होने से संरक्षक सदस्यों की संख्या-वृद्धि होगी, उपरोक्त अभिलाषा भी पूर्ण होगी।

मैं पत्रिका के परामर्शदाता सम्पादक मण्डल, जो कि आर्य समाज के विद्वत्-मण्डल में नक्षत्र-सम चमक रहे हैं, के प्रति विशेष आभार प्रकाशित करता हूँ। ये जिस दिन ठान लेंगे पत्रिका की प्रसार संख्या १०००० निश्चितरूपेण हो जायेगी। 'पत्रिका-संरक्षक मण्डल' के साथ-साथ पत्रिका के सभी लेखकों, पाठकों, न्यास अध्यक्ष महाशय धर्मपाल जी सहित सभी न्यासियों व पत्रिका-प्रकाशन में साधक सभी सहयोगियों के प्रति शुभकामना व्यक्त करते हुए पत्रिका हेतु इसी मनोयोगपूर्ण निरन्तर सहयोग की कामना करता हूँ।

- डॉ. सुखदेवचन्द सोनी
आर्य समाज, शिकागोलैएड, यू.एस.ए.
संरक्षक- न्यास

आर्यरत्न डॉ. ओमप्रकाश(म्याँमार) स्मृति पुरस्कार

* न्यास द्वारा ON LINE TEST प्रारम्भ।
* वर्ष में तीन बार दिया जावेगा ५१०० रु. का उपरोक्त पुरस्कार।
* आयु, लिंग, योग्यता की कोई बाधा नहीं। आबाल-वृद्ध, नर-नारी,
* छोटे-बड़े सभी पात्र हैं।
* विश्व भर के लोगों से इस ON LINE TEST में भाग लेने का अनुरोध।

बेवसाइट - www.satyarthprakashnyas.org

ओ३म्

वेद सुधा

यच्चिद्धि शश्वता तना देवंदेवं यजामहे।
त्वे इद्धूयते हविः।। -ऋग्वेद १/२६/६

प्रस्तुत वेदमन्त्र में क्रियाशीलता का विस्तार करने की प्रेरणा की गई है। क्रियाशीलता से शक्तियों का विस्तार कर एक-एक दिव्य गुण को अपने अन्दर संगत करना ही प्रभु का पूजन है। इससे ही महादेव के पास पहुँचा जा सकता है। दिव्य गुणों को धारण करने का उपाय है शक्ति का विस्तार। शक्तियों के विस्तार के लिए क्रियाशीलता अत्यन्त आवश्यक है। वही शक्ति की जननी है। उसके अभाव में इस दिव्य शरीर मंदिर का प्रत्येक अंग निर्बल हो जाता है।

हम क्रियाशीलता से शक्तिशाली वीर बनें और दिव्य गुणों को अपने अन्दर धारण कर महादेव प्रभु के पास पहुँचने का प्रयास करें।

जो काम करना है उसे अभी करें आगे की प्रतीक्षा नहीं।

The work that is to be done do at once without wait.

★ ★ ★ ★

प्रियो नो अस्तु विश्पतिर्होता मन्द्रो वरेण्यः।
प्रियाः स्वग्नयो वयम्।। -ऋग्वेद १/२६/७

प्रस्तुत वेदमंत्र में दिव्यता की ओर चलते हुए प्रभु के प्रिय बनने की प्रेरणा की गई है। प्रभु को सबका रक्षक होने से अपना भी रक्षक समझें। वही सब कुछ देने वाले, जीवन को चलाने वाले हैं। वही आनन्द देने वाले हैं और वरण करने योग्य हैं। प्रकृति में आनन्द नहीं। उसे चुनने पर आनन्द कैसे मिल सकता है?किन्तु हम स्वग्नि न बन प्राकृतिक विषयों में फँस निर्बल हो जाते हैं तो प्रभु के प्रिय कैसे हो सकते है?

हम स्वग्नि बन उत्तम माता, पिता, आचार्य से सुशिक्षित हो दिव्यता की ओर बढ़कर प्रभु के प्रिय बनें।

संसार की वस्तुओं के संग्रह पर प्रभु दर्शन संभव नहीं।

Realization of God is not possible in worldly affairs

★ ★ ★ ★

त्वं विश्वस्य मेधिर दिवश्च ग्मश्च राजसि।
सा यामनि प्रति श्रुधि।। -ऋग्वेद १/२५/२०

प्रस्तुत वेदमंत्र में प्रभु से मेधा बुद्धि प्राप्त कर जीवन का कल्याण करने की प्रेरणा की गई है। मेधा देने वाले वरुण प्रभु ही द्युलोक, अन्तरिक्ष और पृथिवी लोक तथा सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड के क्षेम व कल्याण करने वाले हैं। सारा ब्रह्माण्ड उनके शासन में ही चल रहा है। मेधा से ही जीवन दीप्त बनता है। बुद्धि से ठीक मार्ग पर चलते हुए ही मनुष्य अपनी मंगल कामना को पूर्ण कर पाता है।

हम बुद्धि के अनुसार चलते हुए जीवन को मंगलमय बनाऐं।

परमात्मा अदृश्य हाथों से रक्षा करता है।

God protects with invisible hands

★ ★ ★ ★

परा हि मे विमन्यवः पतन्ति वस्यइष्टये।
वयो न वसतीरुप।। -ऋग्वेद १/२५/४

प्रस्तुत वेदमंत्र में उत्तम जीवन की प्राप्ति की प्रेरणा की गई है। जब मनुष्य अपने मन को प्रभु के साथ बाँध लेता है तब उसकी क्रोध से रहित बुद्धियाँ उत्तम निवासक तत्वों वाले जीवन की प्राप्ति के लिए निश्चयपूर्वक विषयों से पृथक् होकर प्रभु की ओर जाती हैं। जैसे पक्षी थक थका या भय से अपने घोंसलों की ओर दौड़ते हैं ऐसे ही मनुष्य जब विषयों से थक, दुःखी, भयभीत हो जाता है, उनमें आनन्द नहीं क्षीणता का अनुभव करता है तब उसकी वृत्ति विषयों से पृथक् होकर प्रभु की ओर दौड़ती है। उस समय उसका जीवन सुख, शांति से उत्तम बनता है।

हम विषयों से पृथक् होकर प्रभु की ओर दौड़ें और आनन्द, शांति प्राप्त कर जीवन को उत्तम बनायें।

ईश्वर विश्वासी भयंकर तूफानों में भी अकम्पित होता है।

A theistical becomes firm in all calamities

★ ★ ★ ★

वसिष्वा हि मियेध्य वस्त्राण्यूर्जां पते।
सेमं नो अध्वरं यज।। -ऋग्वेद १/२६/१

प्रस्तुत वेदमंत्र में यज्ञों में लगे रहने की प्रेरणा की गई है। मनुष्य प्राण शक्तियों की रक्षा और यज्ञादि उत्तम कार्म करने योग्य है। यह शरीर उसकी उन्नति का साधन है। उसे स्वस्थ बनाकर शक्तियों का रक्षण कर उन्हें वासनाओं में विनष्ट न होने से बचाना होगा। स्वस्थ शरीर से ही अध्वर कर्म किये जा सकते हैं। अध्वर कर्म वे होते हैं जो औरों की हिंसा न करके कल्याण ही कल्याण करने वाले होते हैं। प्रभु ने जन्म दिया, शरीर रूपी साधन दिया और वेदों में प्रतिपादित यज्ञात्मक कर्म करने का निर्देश भी दिया है।

हम शरीर को स्वस्थ बना, शक्तियों को सुरक्षित रखें और निरन्तर यज्ञों में लगे रहें।

एक शान्त समुद्र में नाविक कभी कुशल नहीं बन पाता।

A smooth sea never made a skillful mariner

★ ★ ★ ★

आ नो बर्ही रिशादसो वरुणो मित्रो अर्यमा।
सीदन्तु मनुषो यथा। -ऋग्वेद १/२६/४

प्रस्तुत वेदमन्त्र में विचारशील बनने की प्रेरणा की गई है। विचारशील ही अपने हृदयों में वरुण, मित्र, अर्यमा जैसे देवों को आसीन करते हैं। इन देवों से सुन्दर प्रेरणा मिलती है। वरुण से- द्वेष शून्य किसी से वैर न हो, मित्र से- सबके साथ स्नेह करने वाले हों, अर्यमा से- लोभादि शत्रुओं को अपने वशीभूत कर दानशील हों। विचारशील मनुष्य किसी से द्वेष नहीं करते, सबके प्रति स्नेह रखते हैं और उनमें दान की भावना सदैव बनी रहती है।

हम विचारशील बनकर देवों को हृदयान्तरिक्ष में आसीन कर हिंसक तत्व को अपने में से समाप्त करने वाले हों।

विचारों को सँवारना ही मनोनिग्रह और एकाग्रता है।

To domesticate of ideas is meditation and concentration

★ ★ ★ ★

न यं दिप्सन्ति दिप्सवो न द्रुह्वाणो जनानाम्।
न देवमभिमातयः।। -ऋग्वेद १/२५/१४

प्रस्तुत वेदमन्त्र में वरुण बनने की प्रेरणा की गई है। वरुण (श्रेष्ठ) वह होता है जो दम्भ का शिकार नहीं होता बल्कि उसके जीवन की सरलता से शिक्षा ले धोखेबाजों की वृत्ति भी नष्ट हो जाती है। वह किसी के प्रति अपने मन में द्रोह की भावना नहीं रखता जिससे उसके सम्पर्क में आकर दूसरे भी वैर की भावना को त्याग देते हैं। उस दिव्य वृत्ति वाले को अभिमान आदि शत्रुवत् वृत्तियाँ भी पीड़ित नहीं करतीं। उसमें लेश मात्र भी अभिमान नहीं होता।

हम दम्भ, द्रोह और दर्प से ऊपर उठकर वरुण बनें और जीवन को यशस्वी बनाऐं।

अपनी जीत और स्थिति पर कभी अभिमान न करें।

Never proud of your victory and position

★ ★ ★ ★

भगभक्तस्य ते वयमुदशेम तवावसा।
मूर्धानं राय आरभे।। -ऋग्वेद १/२४/५

प्रस्तुत वेदमन्त्र में प्रभु-रक्षण से धन के शिखर पर पहुचने की प्रेरणा की की गई है। सम्पूर्ण जगत् के उत्पन्न करने वाले प्रभु धनों का विभाग करने वाले भी हैं। धनों में आसक्त न हो प्रभु के उपासक बनें। प्रभु रक्षण से धन पर आरूढ़ होकर जीवन यात्रा सुन्दरता से पूर्ण हो सकती है। प्रभु रक्षण से दूर होते ही धन मनुष्य पर सवार हो जाता है। वह लक्ष्मी का वाहन उल्लू बन जाता है, उसका ज्ञान नष्ट हो जाता है। वह जीवन भर धन का दास बन धन निर्माण का यन्त्र जैसा बन जाता है और तब उसका धन, धन नहीं निधन का कारण हो जाता है।

हम धनों के विभक्ता प्रभु का उपासना करें और सदा उसके रक्षण के साथ धन के शिखर पर रहें।

संसार गतिमान है, परमात्मा स्थिर और गतिदाता है।

The world is mobile, god is firm and gives motion

★ ★ ★ ★

प्रस्तुति - महेश चन्द्र गर्ग, शास्त्री

कामयाबी और,
खुशहाली का आधार।
स्वजनों की शुभकामना,
स्वजनों का प्यार॥
सत्यार्थ-सौरभ
घर-घर
पहुँचावें

कर्मयोगी महाशय धर्मपाल
अध्यक्ष - न्यास

हर प्रकार के अन्धविश्वास से अपने को मुक्त करें। पूर्व में भी अनेक बार घोषित प्रलय तिथियों के समान ही २१ दिसम्बर २०१२ को भी प्रलय नहीं हुयी। दुनियाँ समाप्त नहीं हुयी।

'आर्य रत्न' डॉ.ओम प्रकाश (म्याँमार) स्मृति पुरस्कार

आप जीत सकते हैं ५१०० रु.

आपको क्या करना होगा-

- न्यास की Web site-www.satyarthprakashnyas.org पर Log on करें।
- "On line test को click करें।"
- साधारण सा जानकरी पत्र On line भरें।
- ५० प्रश्नों का सैट हिन्दी व अंग्रेजी में उपलब्ध है।
- भाषा-विकल्प चुनें।
- बहु विकल्पीय प्रश्न पत्र को हल करें।
- आप अपने प्राप्तांक तत्समय ही जान सकेंगे।
- पुरस्कार चार माह में एक बार दिया जावेगा। अधिकतम अंक प्राप्त करने वाले एक से अधिक प्रतिभागी होने की दशा में निर्णय लॉटरी द्वारा होगा। प्रतिभागी के लिए आयु सीमा व अन्य कोई बन्धन नहीं है।
- अधिकतम अंक प्राप्त करने के लिए सत्यार्थ प्रकाश एवं न्यास की मासिक पत्रिका सत्यार्थ सौरभ पढ़ें, जो कि हमारी वेबसाईट पर उपलब्ध हैं।
- परीक्षा समन्वयक का निर्णय अन्तिम होगा।

- डॉ. अमृतलाल तापड़िया
परीक्षा समन्वयक

कुण्डली पुत्र

कुण्डली पुत्र एक विचित्र नाम प्रतीत होता है। पर इससे पूर्व कि हम 'कुण्डली पुत्र' से हमारा तात्पर्य निवेदित करें, इसकी पृष्ठभूमि बताना चाहेंगे। श्रीगंगानगर पोस्टिंग के समय हमारी प्रयोगशाला अस्पताल परिसर में होने से अनेक चिकित्सक मित्र मध्याह्न में हमारे यहाँ आते थे।

लगभग २३-२४ साल पूर्व वहाँ दिल्ली से एक 'स्त्री रोग विशेषज्ञ'शल्य चिकित्सक आए थे। वे कह रहे थे कि आजकल एक नया प्रचलन प्रारम्भ हुआ है। माता-पिता ज्योतिषियों के निर्देशन में उस सर्वोत्तम समय का चयन करते हैं जिसमें उनकी होने वाली सन्तान का फलादेश सर्वोत्तम हो। अब क्योंकि निर्धारित समय पर सामान्य प्रसव का होना आवश्यक नहीं है अतएव निर्धारित घण्टों-मिनिट पर निश्चित रूप से सन्तान का जन्म हो इसे सुनिश्चित करने हेतु वे चिकित्सकीय दृष्टि से आवश्यक न होने पर भी 'सीजेरियन' (शल्य क्रिया) द्वारा प्रसव का चयन करते हैं। हमारे मुँह से हठात् निकला-**'कुण्डली पुत्र'** अर्थात् ऐसे बच्चे जिनकी कुण्डली पूर्व तैयार करा तथा इस सर्वश्रेष्ठ फलादेश वाली कुण्डली के समयानुसार सन्तान को दुनिया में लाया जाय। यह अवधारणा व्यक्ति के अंधविश्वास की पराकाष्ठा हमें लगी। क्योंकि चिकित्सकीय दृष्टि से माँ अथवा बच्चे की जिन्दगी की सुरक्षा की दृष्टि से अत्यन्त आवश्यक होने पर ही शल्य क्रिया का सहारा लिया जाता था। पर उक्त अंधविश्वास के चलते अनावश्यक रूप से शल्य क्रिया की जोखिम चयनित की जाती है।

जन्म कुण्डली का अंधविश्वास संभवतः सबसे व्यापक अंधविश्वास है जिस पर अति विस्तृत चर्चा की जा सकती है। पर अति संक्षेप में संकेतात्मक रूप से इतना ही कहेंगे कि जन्म पत्रिका के १२ भाग होते हैं व जिस जातक का जन्म जिस समय हुआ है उस समय के लग्न व लग्न में बैठे लग्नेश ग्रह की स्थिति को देखना होता है। ग्रह तथा बारहभाव महत्वपूर्ण माने गये हैं। फलादेश इसी पर आधारित होता है। यथा - लग्न में चन्द्रमा हो तो जातक बलवान ऐश्वर्यशाली, सुखी होगा।

चन्द्र यदि दूसरे भाव में है तो पराक्रम से धन प्राप्ति आदि आदि। अब 'कुण्डली-पुत्र' किस समय दुनिया में आवे तथा किस समय न आवे यह पूर्व निर्धारित कर लिया जाता है। उपरोक्त उदाहरण में ही यदि चन्द्रमा बारहवें भाव में होगा तो जातक नेत्र रोगी तथा कफ रोगी होगा, छठे भाव में अल्पायु होगा। अतः जन्म समय वह निर्धारित किया जावेगा जब चन्द्रमा छठे व बारहवें भाव में न हो।

१२.१२.१२ को कितने ही माता-पिताओं ने सीजेरियन का सहारा ले 'कुण्डली पुत्रों' का जन्म कराया।

१. फलित ज्योतिष के अंतर्गत १२ राशियों में विश्व के सभी उत्पन्न मानव आ जाते हैं। कभी भी जाँच करके देख लें कि विश्व की १/१२ आबादी का भाग्य एकसा नहीं हो सकता।

२. नित्य अखबारों में छपने वाले फलादेशों की भाषा देखें। प्रत्येक का ७० प्रतिशत भाग सामान्य रूप से अन्य राशि वाले पर भी लागू हो जायेगा।

३. एक प्रयोग के अंतर्गत ६६२ ऐसे व्यक्तियों की जन्म कुण्डलियाँ एकत्रित की गईं जिनमें से ३३१ ने आत्महत्या की तथा तथा ३३१ की सामान्य मृत्यु । सभी जन्म कुण्डलियाँ फलादेश हेतु ज्योतिषियों को दे दी गईं। **फलादेश तुक्के ही रहे तीर न बन सके।**

४. Time-Twin (ये वे नवजात हैं जो एक ही समय तथा एक ही स्थान पर पैदा होते हैं) के उपर शोध करवाया गया। उनकी जन्म पत्री एक ही थी। भविष्यवक्ताओं से फलादेश के लिए कहा गया। इसके परिणाम के बारे में डॉ. डीन का कहना था परिणाम फलित ज्योतिष की अवधारणा के विरुद्ध पाये गये।

५. ज्योतिषियों की भविष्यवाणी से क्या संसार भर में हो रही दुर्घटनाओं से कोई बच सका है?उत्तर नकारात्मक ही है।

६. जब ग्रहों की गति आदि अपरिवर्तनीय है तो जन्म कुण्डली तथा तदाधारित फलादेश भी अपरिवर्तनीय ही होगा। जब अपरिवर्तनीय ही है तो उसे जानकर क्या लाभ?और यदि किसी क्रिया,कर्मकाण्ड से अशुभ फल शुभ में बदल जाय तो यह मानना पड़ेगा कि कुण्डली जिन ग्रहों पर आधारित है उन ग्रहों की गति आदि भी परिवर्तनीय है। साथ ही परमेश्वर की कर्म-फल व्यवस्था भी।

तथ्य यह है कि इस व्यापार में संलग्न फलित ज्योतिषी सब कुछ ठीक-ठाक करने का दावा करते हैं, वह भी गारण्टी के साथ।

विनायक वास्तु ऐस्ट्रो शोध संस्थान के पंडित दयानन्द शास्त्री दावा करते हैं कि डाक्टर तो जब रोग आवेगा तब बता सकेगा। परन्तु ज्योतिषी कई वर्ष पूर्व आपको कब कौनसा रोग होगा इसकी चेतावनी दे देगा। इसका अर्थ यह हुआ कि सरकार व्यर्थ ही लाखों करोड़ों रुपये का स्वास्थ्य बजट बनाती है। अतः इन लोगों के अनुसार तो मेडिकल कॉलेज तथा अस्पतालों की आवश्यकता ही नहीं है। क्योंकि ज्योतिषी न केवल जीवन बाधाओं को बताता है वरन् इन बाधाओं के निवारण का अचूक उपाय भी आपको बता देता है। इनका कहना है कि जो व्यक्ति भरपूर मेहनत पर भी सफल नहीं होते वे सब दुर्योग जन्म पत्री से जाने जाते हैं और इन दुर्योगों को दूर भी किया जा सकता है- जैसे रत्न

धारण,हवन-यज्ञ, ग्रहों का दान, ग्रहों के मंत्र जाप,ग्रहों के यंत्र-धारण आदि के द्वारा।

इनके विज्ञापन का एक नमूना देखें-

'कैसा होगा आपका जीवन साथी?घर कब तक बनेगा?नौकरी कब तक लगेगी?सन्तान प्राप्ति कब तक?

जानें व करें बाधा को दूर करने का उपाय। लाभ गारण्टेड।

अर्थात् जन्मपत्री आपके भाग्य की द्योतक है। ओर विशेष उपायों द्वारा दुर्भाग्य को सौभाग्य में बदला जा सकता है। दूसरे शब्दों में समय-विशेष पर उत्पन्न एक बालक अतीव भाग्यशाली हो सकता है तो दूसरे समय में उत्पन्न भाग्यहीन व विपन्न। अब आरम्भ होती है मूर्खता की पराकाष्ठा। उपरोक्त अंधविश्वास से भ्रमित तथाकथित रूप से प्रगतिशील, उच्चशिक्षायुक्त, उच्चवर्गीय समाज में अवस्थित लोगों के मन में 'कुण्डली-पुत्र' पैदा करने का विचार स्फुरित होता है। जब जीवन के हर क्षेत्र में सफलता की गारन्टी जन्म के समय की ग्रह दशाओं से होती है तो क्यों न ऐसा समय निर्धारित किया जावे कि जिस समय की ग्रहों दशा ऐसी हों कि उनमें जन्मे बालक के जीवन में सब कुछ अच्छा ही अच्छा हो, बुरा हो ही नहीं। ज्योतिषी जी की सेवा कर ऐसा समय निकलवाने के पश्चात् अब प्रारम्भ होता है विज्ञान के दुरुपयोग का दौर। स्पष्ट है कि सामान्य प्रसव में समय आपके नियंत्रण में नहीं रहता। इसका एक ही समाधान है 'सीजेरियन' अर्थात् शल्य क्रिया द्वारा बच्चे को जन्म देना।

कुण्डली पुत्र के अभ्यर्थियों की मानसिकता दोहरी होती है। यदि ज्योतिषी के फल-कथन और उसके निवारण-सामर्थ्य पर पूर्ण विश्वास होता तो सीजेरियन क्यों कराते? ये लोग विज्ञान की देहलीज पर भी खड़े हैं। अतएव फलित ज्योतिष परक अभिलाषा की वैज्ञानिक पूर्ति हेतु सीजेरियन की सहायता ले अकारण प्रसूता को सर्जरी के खतरे में डालते हैं। ऐसी मनःस्थिति पर रोवें या हँसें? क्या संसार में एक भी व्यक्ति ऐसा है जिसके जीवन में सुख ही सुख हो दुःख का लेश मात्र भी न हो। महात्मा बुद्ध को यह फार्मूला ज्ञात होता तो संसार को दुःख का घर न कहते।

वस्तुतः व्यक्ति को सुख व दुःख अपने किए गए शुभ-अशुभ कार्यों के आधार पर मिलते हैं न कि जन्म-समय की ग्रहदशा के आधार पर। जन्म के पश्चात् भी ग्रह व्यक्ति का भाग्य निर्धारण कर सकें यह विचार ही व्यर्थ है। महर्षि दयानन्द अपने ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश में स्पष्ट लिखते हैं- **'ग्रह जैसी यह पृथिवी जड़ है, वैसे ही सूर्यादिलोक हैं। वे ताप और प्रकाशादि से भिन्न कुछ भी नहीं कर सकते, क्या ये चेतन हैं जो क्रोधित होके दुःख और शान्त होके सुख दे सकें?'**अतः प्रथम तो यह कि जड़ ग्रहादि मानव के भाग्य के निर्धारक नहीं हो सकते। द्वितीय यह मान भी लिया जाय कि जन्म के समय के नक्षत्रादि पर जातक का भाग्य टिका है तो यह सम्भावना तो बिल्कुल नहीं है कि विभिन्न उपायों से बचाव या समाधान फलित ज्योतिषी जी कर सकते हैं। वेद में तो अत्यन्त स्पष्ट रूप से कहा है-

न किल्विषमत्र नाधारो अस्ति न यन्मित्रैः सममान एति।
अनूनं पात्रं निहितं न एतत्पक्तारं पक्वः पुनरा विशाति।। -

–अथर्ववेद १२.३.४८

'अर्थात् इस कर्मफल में कुछ भी न्यूनाधिक नहीं होता। न ही कोई सिफारिश चलती है। न यह कि किसी मित्र (पण्डित, ज्योतिषी आदि) के साथ गति की

ओ३म्

'सत्यार्थ-सौरभ' मासिक पत्रिका

सदस्यता फार्म

वैदिक शिक्षाओं व भारतीय संस्कृति को जन-जन में प्रसारित करने हेतु आप द्वारा सत्यार्थ प्रकाश को समर्पित सत्यार्थ-सौरभ पत्रिका के प्रकाशन का निर्णय स्तुत्य है। मैं इस पत्रिका का संरक्षक/ आजीवन/ विशिष्ट/वार्षिक सदस्यता ग्रहण करता /करती हूँ।

पत्रिका सहयोगः-

संरक्षक पत्रिका- ११०००/- ☐
आजीवन (१५) वर्ष- १०००/- ☐
विशिष्ट सदस्य (५) वर्ष- ४००/- ☐
वार्षिक सदस्य- १००/- ☐

राशि जरिये/ ड्राफ्ट/ चैक/ मनीआर्डर/ नकद प्रेषित कर रहा/रही हूँ।

मेरा विवरण :-
१. नाम ....
....
२. पूरा पता ....
....
....
पिन ☐☐☐☐☐☐
३.टेलिफोन नं. ....
मोबाइल नं. ....
४. ई-मेल ....

नोटः
१.आप अपना सहयोग बैंक में "श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास" के खाते में भी जमा करवा सकते हैं। बैंक खाता सं.३१०१०२०१००४१५१८ यूनियन बैंक ऑफ इंडिया, मुख्य शाखा उदयपुर। ऐसा करने वाले महानुभाव अपना नाम व पता दूरभाष या पत्र द्वारा तत्काल सूचित करने का श्रम करें, जिससे समय पर रसीद भेजी जा सके।
२.आप अपनी सहयोग राशि इलेक्ट्रॉनिक मनीऑर्डर से ना भेजें। यदि भेजते हैं तो दूरभाष या पत्र द्वारा सूचना अवश्य प्रेषित करें।
३.पता परिवर्तन होने पर परिवर्तित पते की सूचना अति शीघ्र भेजें।
४.जिन महानुभावों ने राशि भेज सदस्यता ग्रहण कर ली है, पर यह विवरण पत्र नही भरा है वे कृपया रिकार्ड हेतु इस प्रपत्र को भरकर अवश्य भेज दें।
५. कृपया अपने गॉव/शहर/जिला/राज्य का पिन कोड अवश्य लिखें।

जा सके। हमारा यह कर्मों का पात्र, जैसा और जितना हमने भरा है, बिना घट-बढ़ के ही रहता है। **अपना पकाया हुआ ही पकाने वाले को पुनः आ मिलता है।'** इसी को साधारण भाषा में कहा है- **'जो जैसा करता है वैसा भरता है' अथवा 'बोया पेड़ बबूल का तो आम कहाँ से होय' इत्यादि**

स्वामी दयानन्द जी महाराज ने 'जन्म-पत्र' को 'शोक-पत्र' इसीलिए कहा कि जब बालक/बालिका का जन्म होता है तो परिवार में प्रसन्नता का वातावरण छा जाता है। कल का दिन उसके लिए कैसा होगा, आगे क्या शारीरिक, मानसिक रोग आवेंगे पता नही। नियमपूर्वक आहार-विहार, पूर्ण परिश्रम कर्तव्य कर्म हैं जिससे हमारी अपनी त्रुटि से हम रोगग्रस्त न हों, असफल न हों।

परन्तु यह प्रसन्नता तब उड़नछू हो जाती है जब ज्योतिषी जन्म-पत्र बनाता है। वह जितना जितना अच्छा फलादेश सुनाता है सभी प्रसन्न होते हैं परन्तु जैसे ही अशुभ फल सुनाता है सभी शोकमग्न हो जाते हैं तथा उस अशुभ को दूर करने की इच्छा से मूर्खतापूर्ण अंधविश्वास के मकड़जाल में फँसते चले जाते हैं,जिससे कभी नहीं निकल पाते। इसमें उन पर जो संस्कार पड़ गये हैं कि ज्योतिष द्वारा सब कुछ जाना जा सकता है तथा आसन्न संकट का उपाय भी कुछ कर्मकाण्डों द्वारा किया जा सकता है, सहयोगी होता है। अतएव महर्षि दयानन्द बचपन से ही बालक ऐसे संस्कारों से परे रहे,ऐसा प्रयत्न माँ-पिता करें, यह विधान करते हैं।

अंधविश्वास आज नये नये प्रकारों में, नई तकनीकों के कन्धे पर चढ़कर घर-घर में पैर पसार चुका है। इससे मानवता को बचाना सर्वाधिक महत्वपूर्ण है। वस्तुतः वर्तमान समय में विज्ञान ने कितनी भी प्रगति कर ली हो, शिक्षा का कितना भी प्रचार-प्रसार हुआ हो परन्तु 'तर्कऋषि' की प्रतिष्ठा इस रूप में नहीं हो पाई है कि व्यक्ति कार्य कारण संबंधों पर विश्लेषणात्मक विवेचन कर सके। विज्ञान के आविष्कार इस धन्धे के फलने फूलने में सहायक हो गए हैं। पहले व्यक्ति कम से कम मंदिर जाने का कष्ट तो उठाता था पर आज दर्शन, पूजा, प्रसाद-वितरण सब ऑन लाइन हो रहे हैं।

वस्तुतः जब तक कर्म-फल सिद्धान्त तथा ईश्वर की न्यायकारिता के सम्बन्ध में दृढ़ निश्चय न हो जायेगा, ऐसे दुकानदारों की दुकानदारी चलती रहेगी।

पूज्य स्वामी विद्यानन्द जी सरस्वती ने स्वलिखित 'सत्यार्थ भास्कर' में कुछ प्रसिद्ध फलित ज्योतिषियों का उल्लेख किया है,जिनके फलादेश अपने ही परिवार के संदर्भ में असत्य निकले,फलतः उन्होंने यह मिथ्या-धंधा बन्द कर दिया। एक उदाहरण है। महामहोपाध्याय की उपाधि से विभूषित पंडित सुधाकर द्विवेदी सबसे बड़े ज्योतिषी माने जाते थे। वे काशी के गवर्नमेण्ट संस्कृत कॉलेज में ज्योतिष विभाग के अध्यक्ष और एतद् विषयक अनेक ग्रन्थों के रचयिता थे। उनके यहाँ एक कन्या का जन्म हुआ। उसका जन्म समय आदि लिखकर उन्होंने अपने अनेक मित्रों तथा शिष्यों से बिटिया की जन्म पत्री बनवाई। स्वयं ने भी बनाई। सबका फलादेश था कि कन्या का सौभाग्य अटल रहेगा। परन्तु विवाह के ६ महीने के अन्दर ही उनकी लाडली विधवा हो गई। तबसे वे फलित ज्योतिष के प्रबल विरोधी हो गये। (सत्यार्थ-भास्कर) पंडित बलदेव प्रसाद सिन्धिया सरकार,पंडित सूर्यनारायण व्यास के साथ भी ऐसा ही हुआ। आएँ, फलित-ज्योतिष की वास्तविकता पर गम्भीर वैज्ञानिक दृष्टि से चिन्तन करें।

- अशोक आर्य
६३१४२३५१०१, ६००१३३६८३६

सत्यार्थप्रकाश प्रचार सहयोग निधि

- सत्यार्थ प्रकाश से उत्कृष्ट कोई ग्रन्थ नहीं जिसके प्रकाशन में आपकी पुण्य दान राशि का प्रयोग हो। सत्यार्थ प्रकाश प्रचार हेतु,कम राशि में अधिक संख्या में यह महान् ग्रन्थ जन-जन के हाथों में पहुँच सके,एतदर्थ निम्न योजना निर्मित की गई है:-
- सत्यार्थ प्रकाश (मानक संस्करण) की द्वितीय आवृत्ति छपने में है। कृपया निम्नानुसार सहयोग कर लागत मूल्य से आधी कीमत में सत्यार्थ प्रकाश का दिया जाना सुनिश्चित करें। आपके द्वारा सहयोगार्थ प्रदान की गई राशि के समक्ष अंकित प्रतियों पर आपका अथवा आपके किसी प्रियजन का चित्र ग्रन्थ पर दिया जावेगा।

राशि	प्रतियों की संख्या	राशि	प्रतियों की संख्या
एक लाख रु.	दस हजार	७५०००	७५००
५००००	५०००	२५०००	२५००
१००००	१०००	इससे स्वल्प राशि देने वाले दानवीरों के नाम ग्रन्थ में अंकित किये जायेंगे।	

आपका दान आयकर अधिनियम की धारा ८० जी के अंतर्गत करमुक्त होगा। राशि न्यास के नाम ड्राफ्ट या चैक द्वारा भेजें अथवा यूनियन बैंक ऑफ इंडिया, उदयपुर खाता क्रमांक ३१०१०२०१००४१५१८ में जमा कर सूचित करें।

निवेदक

भवानीदास आर्य, मंत्री-न्यास
भंवरलाल गर्ग, कार्यालय मंत्री
डॉ.अमृत लाल तापड़िया, उपमंत्री-न्यास

आर्य जगत् के समाचार जानने एवं 'सत्यार्थ सौरभ' ऑनलाइन पढ़ने के लिए लॉगऑन करें

www.satyarthprakashnyas.org

अनेक विशेषताओं से युक्त १८८४ के मूल सत्यार्थ प्रकाश के अनुकूल तत्कालीन शैली का संरक्षण, मुद्रण अशुद्धियों से रहित सत्यार्थ प्रकाश (मानक संस्करण) अवश्य खरीदें।

मात्र ४०₹

प्राप्ति स्थल

श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास, उदयपुर - ३१३००१

- अधिकारी वर्ग से विशेष निवेदन-कृपया अपनी संस्था को 'सत्यार्थ-सौरभ' परिवार से अवश्य जोड़े।
- विद्वानों से निवेदन है कि वे केवल सत्यार्थ-सौरभ के लिये लिखे गये अपने संक्षिप्त, सारगर्भित लेख प्रेषित करने की कृपा करें।

जिन सज्जनों को यह पत्रिका प्राप्त हुई है, वे तो अवश्य ही 'सत्यार्थ - सौरभ' परिवार से तुरन्त जुड़ने की कृपा करें।

मकर संक्रान्ति के पावन पर्व के अवसर पर सारे देश वासियों को हार्दिक शुभकामनाएँ।

विजय शर्मा
उपाध्यक्ष-न्यास

गणतन्त्र दिवस के पावन शुभ अवसर पर सारे देश वासियों को हार्दिक शुभकामनाएँ।

सुरेश चन्द्र अग्रवाल
न्यासी

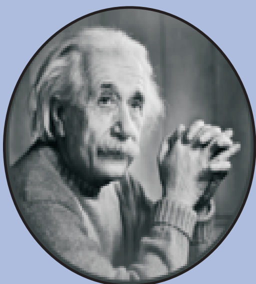

Albert Einstein

- **Highly developed sprits often encounter resistance from mediocre minds.**
- **In the middle of every difficulty lies opportunity.**
- **Blind belief in authority is the greatest enemy of truth.**
- **If you can't explain it to a six year old, you don't understand it yourself.**
- **Imagination is the highest form of research.**

संरक्षक मण्डल - सत्यार्थ सौरभ (₹११,०००)

स्वामी (डॉ.) ओमानन्द सरस्वती, श्रीमान् आनन्द कुमार आर्य, श्री आर.डी. गुप्त, श्री भवानी दास आर्य, श्री सुरेश चन्द्र अग्रवाल, श्री रतिराम शर्मा
श्री दीनदयाल गुप्त, श्री बी.एल. अग्रवाल, श्री कै. देवरत्न आर्य, श्री चन्दूलाल अग्रवाल, श्री मिठाईलाल सिंह, श्री नारायण लाल मित्तल, श्री सुधाकर पीयूष,
श्रीमती शारदा गुप्ता, आर्य परिवार संस्था कोटा, श्रीमती आभाआर्या, गुप्त दान दिल्ली, आर्यसमाज गाँधीधाम, गुप्तदान उदयपुर, श्री राजकुमार गुप्ता एवं सरला गुप्ता,
श्री मोती लाल आर्य, श्री लक्ष्मण सराफ, श्रीमती पुष्पा गुप्ता, प्रो. आई. जे. भाटिया, श्री जयदेव आर्य, श्री श्रवण कुमार गुप्ता, श्रीमती सरोज वर्मा, श्री विवेक बंसल, श्री लोकेश टॉक एवं

स्वामी (डॉ.) आर्येशानन्द सरस्वती
पिण्डवाडा

स्वामी प्रवासानन्द सरस्वती
सायला गुजरात

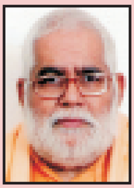

स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती
दिल्ली

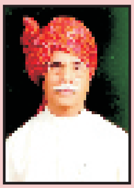

श्रीयुत् राव हरिचन्द्र
नागपुर

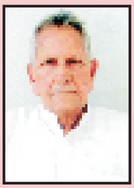

श्री दीपचंद आर्य
किरतपुर

श्री रघुनाथ मित्तल
भीलवाड़ा

श्रीमती गायत्री पंवार
जयपुर

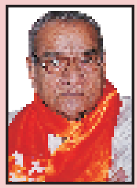

श्री प्रधान जी
मध्यभारतीय आ. प्र. सभा

प्रो. आर.के. एरन
उदयपुर

श्री भारतभूषण गुप्ता
नोएडा

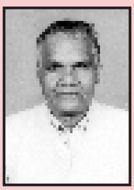

श्री खुशहालचंद्र आर्य
कोलकाता

श्री कृष्ण चौपड़ा
यू.के.

श्री नरेश कुमार राणा
नई दिल्ली

डॉ. मोतीलाल शर्मा
जयपुर

श्री विजय तायलिया
उदयपुर

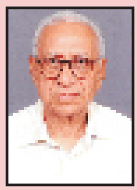

श्री वीरेन्द्र मित्तल
उदयपुर

श्री एम. विजेन्द्र कुमार टाक
बैंगलुरू

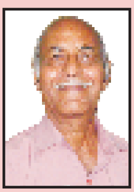

डॉ. अमृतलाल तापड़िया
उदयपुर

श्री एम.पी. सिंह
उदयपुर

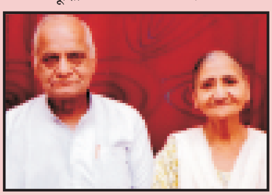

श्री रामप्रकाश छाबड़ा एवं श्रीमती कलावती छाबड़ा
दिल्ली

श्री विकास गुप्ता
नोएडा

डी.ए.वी. एकेडमी टाण्डा

श्री आनन्द कुमार आर्य
टाण्डा

मिश्रीलाल आर्य कन्या इण्टर कॉलेज टाण्डा

श्री आनन्द कुमार आर्य
टाण्डा

शब्द यात्राएँ

दुहितृ से डॉटर (Daughter) तक

डॉ. पूर्ण सिंह डबास

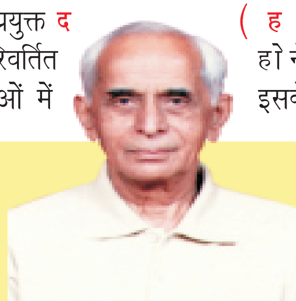

संस्कृत में दुह् धातु का प्रयोग-'दुहना,(गाय से,अर्थात् उसके ऊधस् या स्तन-कोश से) दूध निकालना; (दूध,सोम आदि कोई उत्तम पदार्थ) निकालना या खींच निकालना,निचोड़ना; (लाक्षणिक रूप में) किसी का लाभ उठाना,उपयोग करना तथा दोहन करना आदि'-अर्थों में होता है। कोशकारों ने इस दुह् का मूलरूप दूघ्[१] स्वीकार किया है जो दुह् के दघान तथा दुघ आदि रूपों में दिखाई पड़ता है। दुह् के कुछ रूपों में आरंभिक द के स्थान पर ध भी मिलता है जो कि इसके धुङ्ध्वम, धोक्षयति, अधुक्षत्, अधुक्षस्व तथा धुक्षमही आदि रूपों में स्पष्टतया देखा जा सकता है।[२] दुह् धातु से ही संस्कृत में दोग्धृ शब्द बनता है। जिसका प्रयोग दुहने वाली, दूध देने या पिलाने वाली (गाय तथा धाय आदि) तथा दूध या कोई अन्य प्रकार का लाभ प्राप्त करने वाली के

रूप मिलते हैं। प्राकृत में इसके दुहिआ-, धूआ-,धूदा रूप 'पुत्री' के बोधक हैं तो धीउल्लिआ रूप 'गुड़िया' का वाचक है। जिप्सी या रोमाँ लोगों की भाषा में भी यह शब्द स्थान भेद से अनेक रूपों में पाया जाता है। उदाहरण के लिए एशियाई जिप्सी की फिलिस्तीनी बोली में इसका उच्चारण दीऽरी (diri) हो गया है तो एशियाई जिप्सी की ही फारसी उपबोली में यह दीहीर रूप में मिलता है। डुमाकि में यह दिअ रूप में प्रयुक्त होता है जिसका बहुवचन रूप दीरिङ् है।

संस्कृत दुहितृ के दु का द्व में और द्व का व में परिवर्तन होने से पशाई भाषा की बोलियों में दुहितृ के वेई, वा तथा ओइ आदि रूप भी मिलते हैं।

जैसाकि ऊपर संकेत किया जा चुका है दुहितृ में ध्वनि की दृष्टि से बड़े विचित्र या अपसामान्य परिवर्तन मिलते हैं। परिणामस्वरूप दुहितृ में प्रयुक्त द (ह) ध्वनियों के ज(ह) में परिवर्तित होने से अनेक बोलियों/भाषाओं में इसके

अतिरिक्त ग्वाले तथा बछड़े आदि के लिए भी होता है।

पुत्री या बेटी के अर्थ का बोधक संस्कृत दुहितृ शब्द भी इसी दुह् धातु से निर्मित है। कोशकारों का अनुमान है कि दुहितृ का मूलार्थ -(गाय को) दुहने वाली अथवा अपनी माँ से दूध निकालने वाली' था और दुहिता या पुत्री वाला अर्थ इसी का विकास है।

संस्कृत से चलकर दुहितृ शब्द मध्यकालीन भारतीय आर्य भाषाओं में पहुँचा। इन भाषाओं में पहुँचते पहुँचते ध्वनि की दृष्टि से जैसा अपसामान्य या विचित्र परिवर्तन इस शब्द में दिखाई देता है वैसा रिश्ते-नाते बोधक शब्दों में से शायद ही किसी में हुआ हो। उदाहरण के लिए बौद्ध-संक्रमित संस्कृत (Buddhist Hybrid Sanskrit) में यह धीतर-, धीतरा-,धीता-तथा धीत्रा रूप में मिलता है तो पाली में दुहिता,धीतर-तथा धीता रूप में। पालि में इसके धीतिका तथा धीतलिका रूप भी मिलते हैं जिनमें अर्थ विकसित होकर 'पुत्री' के स्थान पर 'गुड़िया' हो गया है। चीनी तुर्किस्तान में प्राप्त खरोष्ठी लिपि के शिलालेखों में दुहितृ के धितु तथा धिद्

ज तथा झ वाले रूप भी प्राप्त होते हैं। उदाहरणस्वरूप दरद भाषा परिवार की निङ.लामी भाषा का जू (=बेटी); शुमश्ती तथा गवर-बति का जू;कलशा(kalsha) की उर्चन् बोली का जूँहूर; जिप्सी की रूमानियाई उपबोली का चेंहू; खोवार का ज़ूॅर; असमिया के ज़ी, ज़ीव्, बंगाली का झि(=पुत्री;लड़की); उड़िया के झि, झिउ, झुअ; गुजराती का झी,पुरानी सिंधी का झित अश्कूँ (काफिर) का जू; काती/कातेई(kati/katei) (काफिरी) का जु जिसका पूर्वरूप दुँजूँ रहा होगा); वैगाली जू,जू तथा दामेली जूँ आदि[३] रूप देखे जा सकते हैं।

कई बोलियों में द तथा ध वाले रूपों के साथ-साथ द्ज(एक प्रकार की ज़ ध्वनि) वाले रूप भी प्राप्त होते हैं। उदाहरण के लिए शीणा भाषा की गिलगिती बोली में यों तो दुहितृ का

रूपान्तरण दीह है लेकिन संबंधकारक और बहुवचन में इसके क्रमशः दिजॅऽई तथा दिजॉरे जैसे रूप बनते हैं। इसी शृंखला में कोहिस्तानी और गुरेसी बोली का बहुवचन रूप दिजॉर है। इसी प्रकार शीणा की पालेसी बोली में धी और दइ रूप के साथ-साथ जिज् रूप भी प्रचलित है।

दुहितृ में पाए जाने वाले कुछ ध्वनि-परिवर्तन ऊपर उल्लिखित ध्वनि परिवर्तनों से भी अधिक विचित्र हैं। उदाहरण के लिए वैगाली भाषा में दुहितृ के जॅू तथा जू रूपान्तरणों के साथ-साथ एक रूप लूर भी मिलता है। इससे भी आगे प्रासुन भाषा में दुहितृ के ळुसॅत तथा ळुसॅतक जैसे रूप भी मिलते हैं जिनके विषय में विद्वानों का विचार है कि ये दुहितृ के किसी दुश्त् (duct) जैसे लुप्त रूप से विकसित हुए हैं। ज तथा द का ल में रूपान्तरण असंभव बात नहीं है। (संस्कृत यकृत से बने फा. जिगर और) जिगर से अंग्रेजी लीवर के विकास में,ज का ल में,तथा हिन्दी देवर से पश्तो लेवर के विकास में,द का ल में,रूपान्तरण देखा जा सकता है।

दुहितृ की सामान्य विकास-प्रक्रिया से भी अनेक शब्द निर्मित हुए हैं। जैसे कि तिरहुती भाषा का दी,वोटापुरी का दू; बश्करिक दूॅड; तोरवाली धू,धी; माई, साबी तथा फलूड़ा बोलियों का धी, शीणा भाषा की गिलगिती,कोहिस्तानी और गुरेसी बोलियों में प्रयुक्त दीह तथा शीणा की ही पालेसी बोली का धी, सभी संस्कृत दुहितृ के ही रूपान्तरण हैं। इसी प्रकार कश्मीरी(डोडी बोली), गुजराती और लंहदा का धी,सिंधी का धिअ, धिउ, दुव, दुवनि तथा दियनि, पश्चिमी पहाड़ी की विभिन्न बोलियों में प्रयुक्त धे,धैयू धीयू; कुमायूँनी धी,धिया; पंजाबी धी, धीआ, बिहारी धी, मैथिली धी, धिअ, अवधी तथा हिन्दी धी, धिया, पुरानी गुजराती धू, धूय; मराठी धूव् तथा कोंकणी धूॅव्व भी संस्कृत दुहितृ के ही विकसित रूप हैं।

दुहितृ से ही संस्कृत दौहित्र (पुत्री का पुत्र,धेवता,नाती) तथा

दौहित्री(धेवती,नातिन) शब्द बनते हैं जो प्राकृत दोहित-; दुहित (पुत्री का पुत्र) तथा दोहित्ती, दोहित्तिया (पुत्री की पुत्री) से होते हुए अनेक आधुनिक भारतीय आर्य भाषाओं में विभिन्न रूपों में प्रयुक्त होते हैं।[४] दुहितृ का परिवार भारतीय आर्य भाषाओं तक सीमित न होकर अत्यन्त विस्तृत है। अवेस्ता में इसका रूप दुग्तर है जो फारसी में दुख़्त,दुख़्त्र तथा देख़्त्र (पुत्री; कन्या) रूप में मिलता है। इससे आगे चलकर यह शब्द यूरोप की प्राचीन भाषाओं में पहुँचा और कालप्रवाह के साथ-साथ यूरोप की सभी प्रमुख भाषाओं में फैल गया। उदाहरण के लिए यूनानी (ग्रीक) भाषा में यह थुगऽतेर(thugáhtër) व थिग़तेर रूप में तथा एंग्लो -सैक्सन (पुरानी अंग्रेजी) में दोहतॅर(dothor) रूप में मिलता है जिसने मध्यकालीन अंग्रेजी में पहुँचते-पहुँचते दोहतर(dohtar) एवं दोग़्तर (doghter)रूप धारण कर लिया और आधुनिक अंग्रेजी तक आते आते डॉटर(daughter) हो गया। डॉटर (daughter) की वर्तनी में प्रयुक्त 'gh' ध्वनियाँ (जो अब अनुच्चरित हैं) संस्कृत दुहितृ तथा दोग्धृ में प्रयुक्त महाप्राण ध्वनियों ह तथा ध की अवशेष हैं और सं. दुहितृ तथा दोग्धृ से अंग्रेजी डॉटर (daughter) के सम्बद्ध होने की स्पष्ट प्रमाण हैं।

अंग्रेजी के अतिरिक्त यूरोप की अन्य अनेक भाषाओं में भी दुहितृ शब्द विभिन्न रूपों में मिलता है। उदाहरण के लिए जर्मन टॉख्टर, (tochter), आइसलैंड की भाषा का दोत्तिर(dottir); स्वीडिश दोत्तर (dotter), डेनिश दोत्तर, दात्तर तथा डच दोख्तर (dochter) एवं दात्तर (datter), नॉर्वेजियन दात्तर (datter) तथा यिदि्दश तोख्तर (tokhter) संस्कृत दुहितृ के ही रूपान्तरण हैं। इनके अतिरिक्त लिथुआनियन दुक्ते (duktë) स्लाव दुश्ति(dushti) तथा रूसी दोच(doche) भी दुहितृ से ही विकसित रूप हैं।[५]

१. मोनियर विलियम्स कृत 'ए संस्कृत इंग्लिश डिक्शनरी' में देखिए 'दुह्'।

२. 'दुह्' के मूल रूप 'दुघ्' तथा इसके अनेक रूपों में आरम्भिक 'ध' देखकर ही संभवतः अंग्रेजी के प्रसिद्ध कोशकार वाल्टर विलियम स्कीट ने 'दुघ्' के साथ-साथ 'दुह्' का ही एक रूप 'धुघ्' भी स्वीकार किया है। देखिए स्कीट द्वारा सम्पादित 'द कॉन्साइज डिक्शनरी ऑफ इंग्लिश ऍटिमॉलौजी' में दी गई डॉटर (daughter) की व्युत्पत्ति।

३. दुहितृ के अधिकांश भारतीय आर्य रूपों के लिए द्रष्टव्य राल्फ लिलि टर्नर द्वारा सम्पादित ।(A comparative dictionary of the indo Aryan Languages) में शब्द संख्या ६४८६

४. देखिए वहीं, शब्द संख्या ६६०५

५. वाल्टर विलयम स्कीट ने अंग्रेजी डॅग/dug (=थन) को (जो कि मूलतः स्कॅंडेनेवियन शब्द है) स्वीडिश भाषा के 'दाग्ग'(dägga) तथा डेनिश भाषा क daegge (=स्तन्यपान कराना, माँ द्वारा बच्चे को स्तन से दूध पिलाना, चुसाना) से सम्बद्ध बताते हुए सं. दुह्(=दुहना,पशु के थनों से दूध निकालना) से भी तुलनीय बताया है।

-एम ६३, साकेत, नई दिल्ली- ११००१७

जिस काम को करने से, अन्यों को (हमारी बाद की पीढ़ियों को) सुविधा होगी, ऐसा कोई कठिन काम त्यागना नहीं चाहिए।

-मैक्स मूलर

किस अपराध की सजा है 'गरीबी'!

भारत एक परिवार है। हम सभी भारतीय आपस में सम्बन्धी हैं। एक की पीड़ा का दर्द दूसरे को भी होता है। एक का छोड़ा हुआ प्रश्वास दूसरा अपनाता है अर्थात् हम सब एक प्राण हैं। हमारी राष्ट्रीय एकता बड़ी मजबूत है। किसी एक क्षेत्र में कोई विपदा आन पड़ती है तो राष्ट्र के कौने-कौने से मदद के हाथ आगे बढ़ते हैं। इतना सब कुछ होते हुए भी हम भारतीयों की आर्थिक स्थिति में बड़ा भेद है। गरीब और गरीब होता जा रहा है अमीर और अधिक अमीर। इस फासले को घटाना बहुत आवश्यक है। अन्यथा यह अंतर राष्ट्र को किसी भी भयावह मोड़ पर लाकर खड़ा कर देगा। अमीर सुरक्षित नहीं रह पाएगा और आगे ऐसा कुछ भी हो सकता है जिसकी कोई कल्पना भी नहीं कर सकता और हमारे अड़ोस-पड़ोस के देश तो हमारे दुश्मन हैं ही वे तो मौके की तलाश में बैठे हैं। उन्हें भारत की प्रगति फूटी आँख नहीं सुहाती है।

भारत आजाद हुआ तब १९४७ में ४.५ करोड़ लोग गरीब थे। सन् २०१२ में ८४ करोड़ लोग गरीब हैं अर्थात् आजादी के बाद गरीबी २१ गुना बढी। जब मैं छोटा बच्चा था तब प्रायः रेडियो में भारत के प्रधान मंत्री की मीठी-मीठी आवाज में सुना करता था 'हमें भारत से गरीबी मिटानी है।' 'हम भारत से गरीबी मिटा देंगे' 'गरीबी भारत से दस वर्षों में मिट जाएगी।' मेरा बाल-मन बड़ा पुलकित होता था। वाह मैं और मेरे मित्र हम सब गरीब नहीं रहेंगे। मैं बड़े हसीन सपने देखा करता था कि बिना गरीबी के मेरा भारत कैसा दिखेगा? मगर मेरी आँखे आज तक मृग-तृष्णा की तरह बिना गरीबी के भारत का सपना देख रही हैं।

मेले में गरीब बालक की कुचली जाती बाल-हठ

हाथ से मुँह तक जाने वाला कौर बार-बार पूछता रहता है- 'देश में ४० करोड़ लोग भूखे हैं और तू.....।' भारत एक परिवार है तो ऐसा कैसा परिवार जिसके आधे सदस्यों को भरपेट खाना नसीब नहीं। गरीब अपना ठीक से इलाज नहीं करवा सकता और पीड़ा भोगता हुआ बेमौत मर भी जाता है। गरीब के बेटे का आज की महंगी शिक्षण पद्धति में शिक्षित हो पाना क्या संभव है। गरीब का मानव चोले में जन्म लेना अभिशाप बन गया है। गरीब का बेटा जब पिता के साथ चलते कुछ माँग करता है कोई खिलौना खरीदने को कहता है तो पिता पहले तो अनसुनी करता है। बात नहीं बनती तो झूठ-मूठ को बच्चे को पूछता है 'बोल तुझे क्या चाहिये?' 'यह झुनझुना'। गरीब पिता व्यापारी से पूछता है 'कितने का है' जवाब मिलता है 'पंद्रह रुपये का' बच्चे के मुँह में लड्डू फूटते हैं बस अब कुछ ही पलों में यह खिलौना मेरा हो जाएगा। लेकिन पंद्रह रुपये सुनकर उस गरीब के सर पर घन पड़ता है जिसकी उसे पूर्व कल्पना थी। अब वह बच्चे को दलीलें देकर समझाता है ये तो अच्छा नहीं है मैं तुझे इससे भी अच्छा झुनझुना ला दूँगा। ये तो भद्दा है वगैरा-वगैरा। बच्चा मान जाता है तो ठीक है अन्यथा एक करारे थप्पड़ से बच्चे के खिलौना लेने की इच्छा की हत्या कर दी जाती है। बच्चा कुछ देर रोता रहता है, मगर इस बेरहम दुनिया के क्रूर गणित को समझ नहीं पाता।

पाठक वृन्द ध्यान दें आजादी के ६५ वर्षों तक लगातार गरीबी मिटाने का स्वांग करने वाले भ्रष्टाचारियों ने देश के बाहर भारत का धन चार सौ लाख करोड़ रुपये जमा करवा रक्खा है। यह काला धन भ्रष्टाचार से राष्ट्र की जनता की जेब से निकलवाया हुआ पैसा है। यह ४०० लाख करोड़ वाली बात तो अब जग जाहिर हो चुकी है जिसे स्वामी रामदेव जी बड़े जोर-शोर से कह रहे हैं कि यह राष्ट्र का पैसा वापस राष्ट्र में आना चाहिये और देश के विकास में लगना चाहिये।

४०० लाख करोड़ रुपये अर्थात् इसमें भारत की जनसंख्या का भाग दें तो प्रति व्यक्ति ३ लाख रुपयों से अधिक हुआ। ५ व्यक्तियों के परिवार का गिनें तो १६ लाख रुपया भ्रष्ट लोग दबा के बैठे हैं। यदि ये पैसा जनता से न लूटा जाता तो क्या गरीबी रहती। गरीबी के कारण अनेक सुझाए जा सकते हैं उनमें सत्यता का भास भी होता है मगर जब तक राष्ट्र में

भ्रष्टाचार रहेगा गरीबी भी रहेगी। भारत एक परिवार है और हमें कतई मंजूर नहीं है कि परिवार का एक सदस्य आधा पेट सूखी रोटी खा के सोवे तो दूसरे सदस्य की पाँचों अंगुलिया घी में हों।

हम सभी भारतवासियों को सच्चे दिल से भारत से गरीबी उन्मूलन के लिए बस अब कमर कस लेनी है। सरकार के भरोसे रहने से कुछ नहीं होने वाला। तो क्या करना होगा? इसके लिए एक-एक नागरिक का प्रयास महत्वपूर्ण होगा। कुछ काम ऐसे हैं जो हमारे निजी जीवन से संबंधित हैं वे हमारे व्यक्तिगत प्रयास होंगे। कुछ कार्य ऐसे होंगे जो राष्ट्र की जनता मिलकर एकता दिखाकर कर सकती है। तो हमें क्या करना चाहिए?

१. 'संगठन में शक्ति है।' इस सूत्र की सीख मान कर सभी राष्ट्रवादी भारतवासियों को सभी भेद भुलाते हुए एक नेतृत्व के नीचे संगठित होना होगा। आज देशभर में नई आजादी नई क्रान्ति का आन्दोलन चल रहा है। आखिरकार हमें कम से कम ५० से ६० करोड़ लोगों का 'महा संगठन' 'राष्ट्रवादी महावोट बैंक' बनाना है। इसी से संभव होगा भारत की दरिद्रता का निवारण।

२. व्यक्तिगत स्तर पर दैनिक प्रयोग में आने वाली छोटी-छोटी वस्तुएँ जैसे साबुन, कपड़े, जूते, तेल, खाद्य पदार्थ इत्यादि ऐसे खरीदें जो छोटे स्तर पर गरीब व्यक्तियों द्वारा निर्मित हों। याद रक्खें विदेशी कंपनियों के माल का बहिष्कार और छोटे आदमी को प्रोत्साहन गरीबी मिटाने में काफी हदतक कारगर सिद्ध होगा। बड़ी कंपनियों और बड़े-बड़े ब्राण्ड नामों का मोह छोड़ क्षेत्रीय उत्पादों को जीवन में अपनाना गरीब को रोजगार देने का काम करेगा। बड़े मॉल का बहिष्कार और छोटी से छोटी दुकानों से खरीद या ठेले या हाट बाजार से खरीद भी गरीब को रोजगार देगा। क्षेत्रीय सामान जो गुणवत्ता में खरा होते हुए भी विज्ञापन युग में गुमनामी में पिछड़ जाता है, को ही अपनाना भी राष्ट्र प्रेम का एक नमूना होगा। खाद्य तेल में मल्टीनेशनल कंपनी ने भारत भर में अपना व्यापार जमा रखा है। हमें इसे भी छोड़ छोटी ऑइल मीलों का तेल प्रयोग करना चाहिये। वस्त्रों में पूरी तरह खादी नहीं अपना सकें तो कम से कम हमारे तौलिये, चद्दर, घर में पहनने के कपड़े और बाहर के लिए भी कुछ कपड़े तो खादी के हम अपना ही सकते है। मात्र इससे भी बहुत फरक पड़ेगा।

३. गरीब व्यक्ति अशिक्षित बेरोजगार और भूख के मारे राष्ट्रहित और स्वहित भी नहीं सोच पाता है। उसकी ऊँचा सोचने की क्षमता दब जाती है। गरीबी व्यक्ति की बुद्धि, प्रतिभा, कान्ति, खुशी और स्वास्थ्य आदि सब कुछ हर लेती है। इस तरह के गरीब देश के नेता अमीर हैं, करोड़ों पति हैं। यह विरोधाभास क्यों?

गरीबी उन्मूलन के लिए जब सोचा जाता है तो हर किसी को गरीबी के कारण अशिक्षा, अधिक संतानों का होना, व्यसन और बेरोजगारी ही नजर आते हैं मगर ये गरीबी के कारण नहीं हैं गरीबी के कारण उत्पन्न हुई परिस्थितियाँ हैं।

भ्रष्टाचारी को शासन करना है तो सत्ता में बने रहने के लिए उसके लिए गरीबी ही सर्वाधिक उपयोगी है। गरीब बिक सकता है। देशहित को न सोचकर बहकावे में आकर वोट दे सकता है। झूठे वायदों में विश्वास कर सकता है तो भ्रष्टशासकों के लिए चुनाव जीतने के लिए गरीब अति उपयोगी है। यदि गरीबी मिट गई तो दो हजार में वोट बिकेगा कैसे? अतः प्रिय पाठको अब हम जागरूक नागरिकों का कर्तव्य बनता है कि हम बिना विचारे मतदान करने वालों को, वोट बेचने वालों को ठीक-ठीक समझाएँ कि सोच विचार कर गम्भीरता पूर्वक राष्ट्रहित में निस्वार्थ भाव से मतदान करें। जो गरीब को रोजगार उपलब्ध करवाने, व्यसनों से मुक्ति दिलाने आदि में सच्चे दिल से सोच रखता हो, जिसकी कथनी और करनी में फरक न हो, जिसने पहले जनता को धोखा न दिया हो, जिसका पिछला जीवन चरित्र पारदर्शी एवं निष्कलंक हो ऐसे ही राष्ट्रभक्तों को अगले लोकसभा चुनावों में मतदान दिया और दिलवाया जाय तो गरीबी निश्चित रूप से मिट सकती है।

गिरीश त्रिवेदी, पुणे (महाराष्ट्र)

प्रकृति और विज्ञान से जुड़ा महापर्व – मकरसक्रान्ति

'सत्यार्थदूत' श्रीमती सरोज आर्या (वमा)

मकर संक्रान्ति हिन्दुओं का प्रमुख त्यौहार है, देश भर में यह पर्व बड़ी धूमधाम से मनाया जाता है। हालांकि यह देश के विभिन्न भागों में अलग-अलग नाम और अनुष्ठानों के साथ मनाया जाता है। प्रकृति का स्वाभाविक लक्षण ऋतु परिवर्त्तन और प्राकृतिक परिवर्त्तन है, इसी परिवर्त्तन से जुड़ा पर्व है, मकर सक्रान्ति। यह दक्षिणायन से उतरायण हुए सूर्य के अभिनन्दन का पर्व है। यह पर्व प्रतिवर्ष १४ जनवरी को मनाया जाता है, इस भूगोलिक पर्व का सम्बन्ध पृथ्वी, सूर्य और चन्द्रमा से है।

मकर संक्रान्ति और १४ जनवरी – मकर संक्रान्ति ही एक ऐसा त्यौहार है जो१४ जनवरी को ही मनाया जाता है, जबकि अन्य त्यौहारों की कोई तारीख निश्चित नहीं है। वैज्ञानिक मान्यतानुसार मकर संक्रान्ति का पर्व पृथ्वी की गति के अनुसार मनाया जाता है, जबकि अन्य पर्व चन्द्रमा की गति के अनुसार मनाये जाते हैं। एक वर्ष ३६५.१/४ दिन का होता है। पृथ्वी सूर्य की परिक्रमा ३६५.१/४ दिन में पूरा करती है, चौथाई दिन जुड़ते-जुड़ते चार वर्ष में एक दिन हो जाता है। तब प्रति चौथे वर्ष फरवरी २९ दिन की हो जाती है और वर्ष ३६६ दिन का, इसे लीप या लौंद वर्ष कहते हैं।

लेकिन चन्द्रमा के साथ यह बात नहीं, चन्द्रमा २९ दिन१२ घन्टे ४४ मिनिट २.९ सैकेण्ड में पृथ्वी की एक परिक्रमा पूरी करता है। इस गणना के अनुसार एक वर्ष ३६० दिन का हो जाता है, इस प्रकार इस गणना में भी प्रतिवर्ष पाँच दिन का भारी अन्तर आता है। लेकिन हिन्दू ज्योतिषियों द्वारा इसके लिए मलमास या अधिक मास की व्यवस्था कर ऋतुओं के क्रम को ईस्वी सन् के अनुरूप बना लिया जाता है। इस अधिक मास या मलमास की व्यवस्था प्राचीन काल से चली आ रही है, इसे पुरुषोत्तम मास भी कहते हैं। इस व्यवस्था के अन्तर्गत एक ही मास को तीसरे वर्ष में दो बार गिन लिया जाता है। इस व्यवस्था के अन्तर्गत भी मकर सक्रान्ति १४ जनवरी को ही पड़ती है। अतः मकर सक्रान्ति के मर्म को जानने के लिए खगोल और ऋतुचक्र को समझना आवश्यक है।

ऋतुएँ –भारत ही एक ऐसा देश है, जहाँ एक वर्ष में छः ऋतुएँ होती हैं, प्राचीनकाल से आज तक इन ऋतुओं को बसंत, ग्रीष्म, वर्षा, शरद, हेमन्त, शिशिर के नाम से जाना जाता रहा है। यह ऋतुचक्र सृष्टि की आदि से चल रहा है और आगे भी प्रलय पर्यन्त चलता रहेगा। पृथ्वी की वार्षिक गति के कारण ऋतु परिवर्त्तन होते रहते हैं।

पृथ्वी की दो गतियाँ– व्यवहार में कहा जाता है कि सूर्य पूर्व से उदय होता है, लेकिन वास्तव में सूर्य सदैव एक स्थान से उदय नहीं होता है। इस का कारण पृथ्वी की दो गतियाँ – एक दैनिक गति और दूसरी वार्षिक गति है।

वार्षिक गति- पृथ्वी सूर्य की एक परिक्रमा एक वर्ष अर्थात् ३६५.१/४ दिन में पूर्ण करती है, इसे ही वार्षिक गति कहते हैं। पृथ्वी की इसी वार्षिक गति के कारण ऋतु परिवर्त्तन होते रहते हैं।

दैनिक गति – पृथ्वी अपनी धुरी पर लट्टू के समान घुमती ही नहीं लट्टू की तरह डोलती भी है। पृथ्वी क्रान्तिवृत पर लम्बवत् न होकर लगभग ६६.५° पर झुकी हुई है। इस झुकाव के कारण सूर्योदय के स्थान और समय में परिवर्त्तन होता रहता है। पृथ्वी की दैनिक गति के कारण ही दिन और रात होते रहते हैं।

संक्रान्ति का अभिप्राय –संक्रान्ति का अभिप्राय है संक्रमण। सूर्य अपनी धुरी पर घूमता है, पृथ्वी सूर्य की परिक्रमा करती है और चन्द्रमा पृथ्वी की। पृथ्वी सूर्य की परिक्रमा एक वर्ष में पूर्ण करती है, इसे 'सौर वर्ष' कहते हैं। पृथ्वी, सूर्य की परिक्रमा जिस वर्तुलाकार मार्ग में करती है, उसे 'क्रान्तिवृत्त' कहते हैं। ज्योतिषियों द्वारा इस क्रान्तिवृत्त के बारह भाग कल्पित किये हुए हैं, प्रत्येक भाग का नाम उन उन स्थानों पर आकाशस्थ नक्षत्र पुंजों से मिलकर बनी हुई कुछ मिलती जुलती आकृतिवाले पदार्थो के नाम पर रख दिये गये हैं, इन्हें 'राशि' कहते हैं। इनके नाम हैं – मेष, वृष, मिथुन, कर्क, सिंह, कन्या, तुला, वृश्चिक, धनु, मकर, कुम्भ, मीन। बारह मास में पृथ्वी इन बारह राशियों से होकर गुजरती है। इसे पृथ्वी पर राशियों का परिभ्रमण कहा गया है। जब पृथ्वी एक राशि से दूसरी राशि में प्रवेश करती है, तब राशि परिवर्त्तन 'संक्रान्ति' कहलाता है। इस प्रकार सूर्य की परिक्रमा करते हुए पृथ्वी इन बारह राशियों से होकर गुजरती है। जिस दिन पृथ्वी धनु राशि से मकर राशि में प्रवेश करती है, उसे 'मकर संक्रान्ति' कहते हैं।

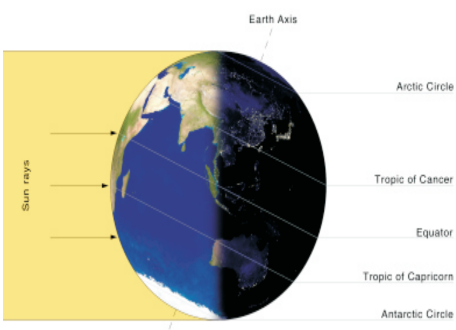

यहाँ स्मरण रखना चाहिए कि **जिसे लोक में सूर्य का संक्रमण कहा जाता है, वह वास्तव में पृथ्वी का संक्रमण है क्योंकि सूर्य अपनी धुरी पर घूमता है जबकि पृथ्वी सूर्य की परिक्रमा करती है और चन्द्रमा पृथ्वी की परिक्रमा करता है। पृथ्वी परिभ्रमण करते हुए इन राशियों से होकर गुजरती है, सूर्य नहीं।** लेकिन लोकाचार से पृथ्वी के संक्रमण को सूर्य का संक्रमण कहने लगे हैं।

अयन का अभिप्राय– अयन का अभिप्राय है सूर्य की गोलार्द्ध स्थिति। सूर्य उत्तरी गोलार्द्ध और दक्षिण गोलार्द्ध की दो अलग- अलग स्थितियों में वर्षभर रहता है। छ माह तक सूर्य क्रान्तिवृत्त से प्रत्येक दिन पिछले दिन से थोड़ा उत्तर की ओर हटकर उदय होता दिखाई देता है और छ माह तक सूर्य क्रान्तिवृत्त से प्रत्येक दिन पिछले दिन से थोड़ा दक्षिण की ओर हटकर उदय होता दिखाई देता है। प्रत्येक छ माह की अवधि को 'अयन' कहते हैं। वर्षा, शरद, हेमन्त ऋतु में सूर्य दक्षिण दिशा की ओर उदय होता रहता है और शिशिर, बसंत और ग्रीष्म ऋतु में सूर्य उत्तर दिशा की ओर उदय होता रहता है। इस प्रकार राशि के हिसाब से कर्क से धनु राशि तक सूर्य दक्षिणायन में और मकर से मिथुन राशि तक सूर्य उत्तरायण में भ्रमण करता है।

उत्तरायण और दक्षिणायन – सूर्य के उत्तर की ओर उदय की अवधि को 'उत्तरायण' और दक्षिण की ओर उदय की अवधि को 'दक्षिणायन' कहते हैं। उत्तरायण काल में दिन लम्बे होते जाते हैं और रात्रि छोटी होती जाती हैं। उत्तरायण में सूर्य की ज्योति क्रमशः प्रखर होती जाती है। दक्षिणायन में दिन छोटे होते जाते हैं और रातें लम्बी होती जाती हैं और दक्षिणायन में सूर्य की प्रखर ज्योति क्रमशः क्षीण होती जाती है। मकर संक्रान्ति से सूर्य उत्तरायण और कर्क संक्रान्ति से सूर्य दक्षिणायन का प्रारम्भ होता है।

एक महत्वपूर्ण विन्दु यह है कि अयन-चलन की गति बराबर पिछली ओर होते रहने के कारण आज से लगभग ७८ वर्ष पूर्व मकर संक्रान्ति १२ या १३ जनवरी को मनाई जाती थी। वर्तमान में मकर संक्रान्ति १४ जनवरी को मनाई जा रही है। २२वीं सदी में प्रतिवर्ष १५ जनवरी के दिन मकर संक्रान्ति मनने लगेगी।

इस अयन-चलन का सबसे पहले पता यूनानी ज्योतिषी हिप्पार्कस को लगभग १५० ई. पूर्व हुआ था, उनको प्रेक्षणात्मक ज्योतिष सम्राट कहा जाता है और सन् ६३२ ईस्वी में भारत के मुंजाल नामक ज्योतिषी को इसका ज्ञान हुआ था, इसका उल्लेख भास्कर द्वितीय ने अपने प्रसिद्ध ज्योतिष ग्रन्थ सिद्धान्त शिरोमणी में किया है। भारतीय ज्योतिषियों ने परम्परागत सूर्य सिद्धान्त को ही मान्यता प्रदान की है।

मकर संक्रान्ति का महत्त्व – उपनिषद्काल में देवयान और पितृयान नाम से कालखण्ड़ का निर्धारण किया है, इसी देवयान कालखण्ड के अन्तर्गत मकर संक्रान्ति का पर्व आता है। देवयानकाल में ज्ञानी लोग स्वशरीर त्याग की अभिलाषा इस आशा पर करते हैं कि इस काल में देह त्यागने से उनकी आत्मा सूर्यलोक में होकर प्रकाश मार्ग से प्रयाण करेगी। लेकिन इसका अभिप्राय यह नहीं कि पृथ्वीलोक से सूर्यलोक में जाकर मोक्ष प्राप्त करते हैं। सूर्य शुद्धता एवं प्रकाश का प्रतीक है। जो शारीरिक, मानसिक एवं आध्यात्मिक दृष्टि से सर्वथा शुद्ध हो जाते हैं, वे सूर्य के अर्थात् शुद्ध ज्ञान के मार्ग पर चलते हैं। संसार की किसी वस्तु में उनकी आसक्ति नहीं होती, इसलिए वे परमात्मा को प्राप्त करते हैं। महाभारत के प्रसिद्ध पात्र अखंड ब्रह्मचारी महात्मा भीष्म की इच्छा मृत्यु की कथा भी इसी पर्व से जुड़ी है- उन्होंने इसी उत्तरायणकाल के आगमन तक शर-शय्या पर शयन करते हुए अपने नश्वर शरीर के त्याग की प्रतीक्षा की थी।

सूर्य की प्रखर ज्योति के कारण उत्तरायण का विशेष महत्त्व माना जाता है, अतः इस काल के प्रथम दिवस मकर संक्रान्ति को भी विशेष महत्त्व दिया जाता है। इस अवधि में न केवल दिन ही बड़े हो जाते हैं अपितु मनुष्य मात्र के लिए कर्म के काल का भी विस्तार हो जाता है। दक्षिणायन में दिन छोटे हो जाते हैं, इस कारण कर्म करने का समय सीमित होता है। विद्वज्जनों का कथन है इस काल में सूर्य की उष्णता बढ़ने के कारण मनुष्य और प्राणियों में रक्त संचार की गति और कार्य क्षमता बढ़ जाती है। यही कारण है कि इस दिन के पश्चात् प्रकृति भी खिल उठती है और कुछ समय पश्चात् बसंत आ जाता है। प्रकृति कर्मणा मनुष्य को प्रेरणा करती है कि वह अपने समय को उत्तम कार्य में लगाये।

मकर संक्रान्ति माघ मास में आती है, इस समय शीत का आधिक्य रहता है। वैद्यक शास्त्र में शीत प्रतिकार के लिए तेल, तिल और तूल (रूई) बतलाये गये हैं, जिसमें तिल सबमें मुख्य हैं। इसलिए इस पर्व पर तिलों का विशेषतः प्रयोग किया जाता है, इसके द्वारा विभिन्न पकवान जैसे तिल के लड्डू, तिलपट्टी, तिल की बरफी आदि बनाई जाती है और इसका दान भी किया जाता है। वैदिक संस्कृति में दान को धर्म का एक स्कन्ध कहा गया है, अतः आर्यपर्वों पर दान अवश्य करना चाहिए।

इस दिन पतंगें उड़ाने की परम्परा है, नीले आकाश में अपने दम पर ऊँचाइयों को छूती और विश्वास की डोर से बंधी पतंग सूर्य के निकटतम पहुँचने की चेष्टा करती है। इसके पीछे उद्देश्य यही है कि हवा भले ही विपरीत दिशा में हो लेकिन संयम और आत्मबल से ऊँचाइयाँ पाई जा सकतीं हैं अर्थात् परिस्थिति भले ही विपरीत हो, संयम और आत्मबल से अपने उद्देश्य को प्राप्त किया जा सकता है।

देश के उत्तरी भाग में यह पर्व मकर संक्रान्ति के नाम से, दक्षिण भारत में यह पर्व पोंगल के रूप में मनाया जाता है, यहाँ यह त्यौहार फसल की कटाई के उल्लास और उमंग को अभिव्यक्त करता है और चार दिन तक मनाया जाता है। कृषि पर आश्रित असमिया लोग फसल की कटाई और कृषि कार्य के सफल सम्पादन के आनन्दस्वरूप जो पर्व मनाया जाता है, उसे माघ बिहू या भोपाली बिहू कहते हैं। पंजाब में यह पर्व लोहड़ी और माघी' के रूप में दो दिन मनाया जाता है।

– ४८७, नमक की मण्डी
किशनपोल बाजार, जयपुर

वैदिक त्रैतवाद

डॉ. सोमदेव शास्त्री

प्रत्येक वस्तु का कोई बनाने वाला (निर्माता) होता है तथा जिस पदार्थ से वह वस्तु बनती है वह पदार्थ भी होता है और जिसके लिए वह वस्तु बनाई गई है उस वस्तु का उपयोग करनेवाला भी अवश्य होता है। इन तीनों के बिना वस्तु का निर्माण नहीं हो सकता और न ही उसकी उपयोगिता सिद्ध हो सकती है।

जैसे घड़े को बनानेवाला (निर्माता) कुम्हार होता है तथा मिट्‌टी से घड़ा बनता है और मिट्‌टी के घड़े का उपयोग करने वाला घड़े में पानी भरने वाला, घड़े के पानी को पीने वाला व्यक्ति भी होता है। यदि तीनों में से कोई एक भी न हो तो घड़ा नहीं बन सकता और उसकी उपयोगिता भी सिद्ध नहीं हो सकती है। जैसे घड़े को बनानेवाला कुम्हार हो और यदि मिट्‌टी न हो तो घड़ा नहीं बन सकता है और यदि मिट्‌टी हो और घड़ा बनानेवाला कुम्हार न हो तब भी घड़ा नहीं बन सकता है। यदि घड़ा बनानेवाला कुम्हार और मिट्‌टी दोनों ही हों तब घड़ा तो बन जाता है किन्तु यदि घड़े का उपयोग करने वाला, घड़े को काम में लेनेवाला न हो तो घड़े का निर्माण निरर्थक है। इसलिए घड़े को बनानेवाले के साथ घड़े का उपयोग करने वाले का होना भी आवश्यक है तथा जिस मिट्‌टी से घड़ा बनता है उसका होना भी आवश्यक है, ये तीनों ही घड़े के निर्माण में आवश्यक हैं इन सबका अपना महत्व है। इसी प्रकार भोजन, वस्त्र, मकानादि प्रत्येक पदार्थ में बनानेवाला, जिससे भोजन वस्त्रादि बनते हैं वह पदार्थ तथा जिसके लिए बनाया जाता है वह-ये तीनों ही होते हैं। इन तीनों को शास्त्रीय भाषा में निमित्त कारण, उपादान कारण और साधारण कारण कहते हैं। घड़ा बनानेवाले कुम्हार को घड़े का निमित्त कारण कहते हैं तथा जिस मिट्‌टी से घड़ा बनता है वह मिट्‌टी घड़े के उपादान का कारण है और जिसके लिए घड़ा बना है वह साधारण कारण कहलाता है।

इसी प्रकार इस सृष्टि को बनानेवाला परमेश्वर है, जिससे यह सृष्टि बनी है वह प्रकृति कहलाती है और जिसके लिए सृष्टि का निर्माण परमेश्वर ने किया है उसे जीवात्मा कहते है। इस सृष्टि में इन तीनों का होना आवश्यक और महत्त्वपूर्ण है। यदि इन तीनों में से कोई एक भी न हो तो यह सृष्टि नहीं बन सकती है। यदि सृष्टि का बनानेवाला परमेश्वर ही हो और जिससे वह सृष्टि का निर्माण करता है वह प्रकृति न हो तो परमेश्वर सृष्टि नहीं बना सकता है और यदि प्रकृति ही हो और इसका बनाने वाला ईश्वर न हो तब भी सृष्टि अपने आप नहीं बन सकती है। क्योंकि जड़ पदार्थ में अपने आप क्रिया नहीं होती है। बिना कुम्हार के मिट्‌टी से घड़ा अपने आप स्वयं नहीं बनता है। वैसे ही जड़ प्रकृति से सृष्टि अपने आप नहीं बनती है। यदि ईश्वर और प्रकृति दोनों ही हों और जिसके लिए सृष्टि का निर्माण होता है वह जीवात्मा न हो तब भी सृष्टि की कोई उपयोगिता नहीं होती है। यदि जीवात्मा न हो तो सृष्टि का निर्माण परमेश्वर किसके लिए करता है, उसका सृष्टि निर्माण करना निरर्थक होगा। इसलिए सृष्टि के निर्माण में जीवात्मा का भी महत्त्वपूर्ण स्थान है।

ये तीनों ही आवश्यक हैं, इन तीनों की अनिवार्यता की दृष्टि से ही उनके लिए ''त्रैतवाद'' शब्द का प्रयोग किया जाता है। वेद में इन तीनों के अस्तित्व उपयोगिता और अनिवार्यता का स्पष्ट वर्णन किया गया है।

द्वा सुपर्णा सयुजा सखाया समानं वृक्ष परिषस्वजाते।
तयोरन्यः पिप्पलं स्वाद्वत्यनश्नन्नन्योभिचाकशीति।। ऋग्वेद- १/१६४/२

अर्थात् ईश्वर और जीव दोनों चेतन और अनादि हैं तथा तीसरा अनादि कारण प्रकृति है। प्रकृति से बने हुए संसार रूपी वृक्ष का फल जीवात्मा भोग रहा है, तथा परमेश्वर इसका फल न खाता हुआ चारों ओर देख रहा है। अर्थात् सृष्टि का निर्माण परमेश्वर ने अपने लिए नहीं जीवात्मा के लिए किया है वही इस सृष्टि में कर्म करता और उनका फल भोगता है।

महाभारत के युद्ध के पश्चात् वेदादि शास्त्रों के विपरीत अनेक विचारधारा प्रारम्भ हो गईं। उन्हीं विचारधाराओं में ''वैदिक त्रैतवाद'' के स्थान पर द्वैतवाद-अद्वैतवाद विशिष्टाद्वैतवादादि विचारधाराओं का प्रचलन प्रारम्भ हुआ और जन सामान्य वैदिक त्रैतवाद के महत्त्व को भूल गया है। जड़ (प्रकृति) और चेतन (पुरुष) ये दोनों पृथक् तत्व हैं जिनके परस्पर सहयोग से संसार बनता है। निमित्त (ईश्वर) और उपादान (प्रकृति) दोनों के द्वारा जीवात्मा के लिए सृष्टि की रचना होती है। इसके स्थान पर यह विचारधारा प्रारम्भ हो गई कि इस

सृष्टि का निर्माता निमित्त कारण परमेश्वर नहीं है। जड़ प्रकृति से ही सृष्टि अपने आप बन गई है। जड़ पदार्थों के परस्पर मिलने से अवस्था विशेष में चेतनता आ जाती है। जैसे दही और गोबर के मिलने से बिच्छू पैदा हो जाता है। वैसे ही पंच स्थूल भूतों-पृथ्वी-जल-अग्नि-वायु और आकाश के विशेष सहयोग होने पर चेतन जीवात्मा बन जाता है। अर्थात् ''जड़ से ही चेतन बन जाता है'' यह विचारधारा प्रारम्भ हो गई। जिसे चारवाक्, जैन बौद्धादि सम्प्रदायों ने प्रचारित किया। आधुनिक भौतिकवादी भी इसी प्रकार मानते हैं कि कुछ प्राकृतिक द्रव्यों के मिश्रण से प्रोटोप्लाज्म (जीवन) प्रारम्भ हो जाता है।

इस विचारधारा के ठीक विपरीत शंकराचार्य ने घोषणा की कि चेतन (ब्रह्म) से ही जड़ जगत् पैदा हुआ है। ''एको ब्रह्म द्वितीयो नास्ति'' का उद्घोष किया, उनकी विचारधारा को ''अद्वैतवाद'' के नाम से जाना जाता है। उन्होंने अपनी मान्यता को स्थापित करने के लिए उदाहरण दिए हैं। केवल ब्रह्म ही जगत् का निमित्त और उपादान कारण है इसके लिए ब्रह्म से अतिरिक्त प्रकृति के मानने की कोई आवश्यकता नहीं है। जैसे मकड़ी अपने अन्दर से ही जाला बनाती है वैसे ही चेतन ब्रह्म (परमेश्वर) ने अपने द्वारा ही यह संसार रूपी जाला बनाया है।

किन्तु मकड़ी के जाले का गहन चिन्तन करने से स्पष्ट होता है कि मकड़ी का शरीर मकड़ी के शरीर के अन्दर रहने वाला जीवात्मा ये दोनों मिलकर जाले को बनाते हैं। मरी हुई मकड़ी जाला नहीं बना सकती। इसी प्रकार बिना शरीर के केवल जीवात्मा भी जाला नहीं बना सकता है। इस उदाहरण से भी वैदिक त्रैतवाद की मान्यता ही पुष्ट होती है कि अकेला चेतन ब्रह्म परमेश्वर सृष्टि की रचना नहीं कर सकता है और अकेली प्रकृति जड़ भी सृष्टि की रचना नहीं कर सकती है अपितु चेतन और जड़ के सहयोग से निमित्त और उपादान कारण से जगत् की रचना होती है।

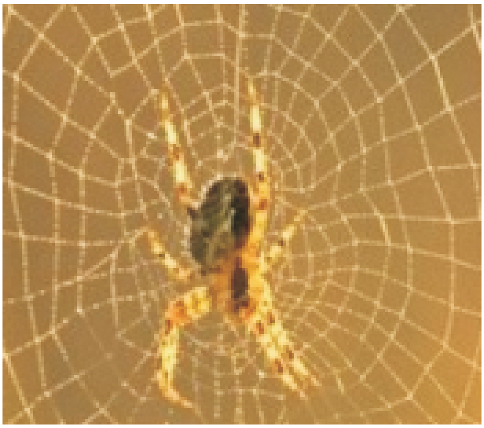

यदि चेतन ब्रह्म ही जगत् का (उपादान) कारण है तो सामान्य नियम है कि जो गुण (उपादान) कारण से होते हैं वे ही गुण उससे बने हुए कार्य पदार्थ में भी रहते हैं। जैसे मिट्टी के गुण मिट्टी के बने हुए घड़े में रहते हैं। वैसे चेतन ब्रह्म से जड़ जगत् कैसे बन गया। चेतन से जड़ता कैसे आ गई है? ब्रह्म तो आनन्द स्वरूप है परन्तु इससे बने हुए संसार में दुःख क्यों है, यह प्रश्न जब अद्वैतवादी के समक्ष रखा जाता है तब सिद्ध करने के लिए श्री शंकराचार्य ने अपने शब्दों की रचना की और अपने ढंग से इनका अर्थ किया। वे कहते हैं कि एक परिणाम होता है और एक विवर्त होता है। दूध को जमाने पर दही बनता है। दही दूध का परिणाम है। अंधेरे में पड़ी हुई रस्सी को मनुष्य प्रकाश पूरी तरह से न होने के कारण साँप समझता है और भयभीत होने लगता है। अंधेरे में पड़ी हुई रस्सी को सर्प समझना ''विवर्त'' कहलाता है। रस्सी वास्तव साँप नहीं है किन्तु भ्रम के कारण मनुष्य उसे सर्प समझता है, ठीक इसी प्रकार मनुष्य जिस जगत् को जड़ कहता है, प्रत्येक मनुष्य पृथक्-पृथक् अपनी सत्ता स्वीकार करता है यह सब विवर्त है, भ्रम है। वास्तव में केवल ब्रह्म की ही सत्ता है और सारा संसार मिथ्या है। यह उनका प्रसिद्ध वाक्य है- ''ब्रह्म सत्यं जगन्मिथ्या'' अर्थात् ब्रह्म की सत्ता वास्तविक रूप में है, चेतन ब्रह्म का ही अस्तित्व है और सारा संसार मिथ्या- झूठा है, भ्रम है। संसार मिथ्या क्यों है?इसका समाधान करते हुए कहते हैं कि जैसे स्वप्न में मनुष्य देखता है कि अपना भाई या पुत्र पास में खड़ा है किन्तु जैसे ही आँख खुलती है तो भाई या पुत्र पास में खड़ा नहीं दिखता है अर्थात् स्वप्न में देखी हुई वस्तुओं का अस्तित्व नहीं होता है वैसे ही संसार का वास्तविक रूप में अस्तित्व नहीं है। यह सब स्वप्न के समान भ्रम या मिथ्या झूठा है। जिस विवर्त शब्द की कल्पना करके रस्सी को साँप समझने का उदाहरण देकर शंकराचार्य और उनके अनुयायी अद्वैतवादी यह सिद्ध करने का प्रयास करते हैं कि जैसे साँप की सत्ता नहीं है वैसे ही जगत् का अस्तित्व नहीं है किन्तु उनके दिए हुए उदाहरण से ही स्पष्ट होता है कि साँप का अस्तित्व होता है उसकी सत्ता होती है इसलिए टेड़ी, मेढ़ी रस्सी को देखकर टेडे-मेढ़े साँप का भ्रम होता है। अंधेरे में पड़ी हुई रस्सी को देखकर को देखकर टेबल-कुर्सी या छाते का भ्रम नहीं होता अपितु साँप का ही होता है क्योंकि रस्सी और साँप के टेड़ेपन की समानता है। यदि कहीं पर भी साँप का अस्तित्व न होता और यदि मनुष्य ने साँप न देखा होता तो कभी भी उसे साँप का भ्रम न होता। रस्सी में साँप के भ्रम होने से ही सिद्ध होता है कि साँप की सत्ता है। इसी प्रकार विवर्त शब्द की कल्पना करके जिस जगत् को मिथ्या सिद्ध करने वाले अद्वैतवादियों को जगत् की यथार्थता, इसका अस्तित्व, इसकी सत्ता अवश्य ही माननी पड़ेगी। भले अपने मनस्तुष्टि के लिए इस जगत् को मिथ्या कहें किन्तु दूसरी जगह तो जगत् का अस्तित्व स्वीकार करना ही पड़ेगा जिससे उस यथार्थ जगत् के आधार पर इस जगत् को मिथ्या कहने का दुःसाहस करते हैं।

स्वप्न का उदाहरण देकर भी लोगों को भ्रमित किया जाता है। जब कि वास्तविकता यह है कि जागृत अवस्था के अनुसार स्वप्न अवस्था

स्वप्न अवस्था होती है। जागते हुए मनुष्य जो देखता-सुनता है वे ही वस्तुएँ स्वप्न में देखता है। जो व्यक्ति जन्म से अन्धा होता है जिसने कभी भी किसी भी पदार्थ को नहीं देखा उसे स्वप्न में भी कोई वस्तु नहीं दीखती है। इससे स्पष्ट होती है कि जागृत अवस्था के अनुसार स्वप्न है, न कि स्वप्न अवस्था के अनुसार जागृत अवस्था। जागृत अवस्था में व्यक्ति के पास उसका भाई या पुत्र अनेकों बार खड़ा रहता है वे ही संस्कार स्वप्नावस्था में सक्रिय हो जाते हैं और स्वप्न में भी वैसा ही दीखने लगता है। इस विवेचन से भी यह स्पष्ट होता है कि स्वप्न में जो चीजें दिखाई देती हैं वे जागृत अवस्था में अवश्य होती हैं। यह वर्तमान संसार स्वप्न के समान मिथ्या है तो, जागृत अवस्था के समान कहीं अवश्य ही यर्थाथ संसार मानना पड़ेगा जिसके संस्कार इस वर्तमान संसार में स्वप्न के समान प्रतीत हो रहे हैं। अर्थात् कहीं न कहीं तो संसार की यर्थाथता को स्वीकार करना ही पड़ेगा। जैसे बिना साँप की सत्ता को स्वीकार किये उसका भ्रम नहीं हो सकता है। वस्तुतः संसार मिथ्या नहीं है। अस्थिर है, नित्य नहीं है अनित्य है जैसा कि यजुर्वेद....४०/१ में कहा है ''ईशा वास्यमिदं सर्वं यत्किञ्च जगत्यां जगत्''।। अर्थात् ईश्वर सर्वत्र विद्यमान है, नित्य है, ऐश्वर्यशाली है, यह जगत् चलायमान-अस्थिर-अनित्य है-गतिशील है। संसार का प्रत्येक पदार्थ विनाश की ओर जा रहा है। जगत् को जगत् इसलिए कहते हैं कि- ''गच्छतीति जगत्'' जो चल रहा है वह जगत् है, संसरति इति संसारः जो संसरण कर रहा है वह संसार है। जगत् और संसार की अस्थिरता का अतिश्योक्ति रूप से इसे मिथ्या कहकर लोगों को भ्रमित किया है। **यर्थाथता यह है कि ब्रह्म का भी अस्तित्व है और जगत् का भी अस्तित्व है। अन्तर केवल इतना ही है कि चेतन ब्रह्म नित्य है और प्रकृति से बना हुआ जगत् अनित्य है, किन्तु दोनों ही हैं।**

अद्वैतवादियों के समक्ष जब यह प्रश्न उपस्थित किया जाता है कि यदि ब्रह्म एक है तो एक से अनेक कैसे हो गये! इसका उत्तर देते हुए वे कहते है कि माया के कारण एक से अनेक हो गये। फिर यदि यह प्रश्न किया जाता है कि माया है द्रव्य या गुण है। यदि माया को द्रव्य अर्थात् पदार्थ मानते हैं तो अद्वैत एक नहीं रहा फिर तो ब्रह्म और माया ये दो हो गये फिर तो द्वित्व अर्थात् द्वैत हो गया और यदि आप इसे गुण कहें तो यह प्रश्न होगा कि ब्रह्म के अतिरिक्त कुछ दूसरा तत्व तो है ही नहीं, फिर यह गुण ब्रह्म का माना जायगा तो क्या आप यह स्वीकार करेंगे कि माया के कारण ज्ञानी ब्रह्म अज्ञानी हो गया। यह कैसा गुण कि सूर्य जो प्रकाश का भण्डार है उसमें आप अँधेरा है यह सिद्ध करने का दुःसाहस कर रहें हैं। क्योंकि माया के कारण ही ब्रह्म अपने को जीव समझता है, और प्रत्येक जीव अपना पृथक्-पृथक् अस्तित्व स्वीकार करता है। संसार के विविध पदार्थ माया के कारण ही दिखाई देते हैं। यदि माया को जड़ मानते हों या चेतन मानते हों तो यह प्रश्न उपस्थित होता है। यदि इसे आप जड़ कहते हैं तो बड़ा आश्चर्य है कि जड़ माया का चेतन ब्रह्म पर इतना प्रभाव कि नित्य आनन्द स्वरूप ब्रह्म अपने आपको अज्ञानी, दुःखी मानने लगा और यदि माया को चेतन मानते हैं तो फिर वही समस्या है कि दो चेतन हो जायेंगे। ''एको ब्रह्म-द्वितीयो नास्ति'' यह सिद्ध नहीं होगा। ऐसे अनेक प्रश्न अद्वैतवादियों के समक्ष हैं जिनका वे समुचित समाधान नहीं कर पाते हैं।

वस्तुतः माया शब्द का प्रयोग श्वेताश्वेतर उपनिषद्(४/१०) में प्रकृति के लिये हुआ है, वहाँ स्पष्ट ही लिखा है ''मायां तु प्रकृतिं विद्यात् मायाविनं तु महेश्वरम्''।। अर्थात् माया को प्रकृति समझो और मायावी को ईश्वर समझो। ब्रह्म और माया से अर्थात् ईश्वर और प्रकृति से सृष्टि की रचना होती है, यह स्पष्ट होता है।

जीव के विषय में अद्वैतवादियों का मत है कि ''जीवो ब्रह्मैव नापरः'' अर्थात् जीव ब्रह्म ही है अन्य नहीं है। इसलिए ''अहं ब्रह्मास्मि'' मैं ब्रह्म हूँ ऐसा उल्लेख उपनिषदों में है यह सिद्ध करते हैं। उदाहरण के द्वारा स्पष्ट करते है कि जैसे सूर्य एक है और दस बर्तन में पानी भरकर रखा है तो दस बर्तनों में सूर्य की परछाई दिखाई देती है जैसे कि दस सूर्य हैं, किन्तु वास्तव में सूर्य तो एक ही है। वैसे ही ब्रह्म तो एक ही है किन्तु अन्तःकरण में प्रतिबिम्बित होने वाले ब्रह्म को जीव कहा जाता है वस्तुतः वह जीव ब्रह्म ही है। किन्तु इस उदाहरण को देते समय वे भूल जाते हैं कि सूर्य और पानी का बर्तन दोनों एक-दूसरे से दूर हैं इसलिए सूर्य की प्रतिच्छाया- (परछाईं) पानी में पड़ती है। ब्रह्म तो सर्व व्यापक है उसकी दूरी न होने से परछाईं का प्रश्न ही नहीं होता। फिर सूर्य स्थूल भौतिक पदार्थ है। क्या ब्रह्म भी स्थूल और भौतिक पदार्थ है? फिर अन्तःकरण वाला ब्रह्म जिसे जीव कहते हैं, वह अज्ञानी-दुःखी और अन्तःकरण रहित ब्रह्म सर्वज्ञ और आनन्द स्वरूप है, इस प्रकार ज्ञानी ब्रह्म को अज्ञानी आनन्द के भण्डार को दुःखी ब्रह्म सिद्ध करते हैं, जिसका भी कोई समाधान नहीं है।

वेदादि शास्त्रों में जीवात्मा को ब्रह्म से पृथक् ही वर्णित किया है, जैसा कि कहा है....''त्यक्तेन भुञ्जीथाः''।। ४०/१।। हे मनुष्य त्याग पूर्वक भोग कर। यदि जीवात्मा का पृथक् अस्तित्व स्वीकार नहीं करेंगे तो क्या यह वेद-मंत्र ब्रह्म के लिए आदेश देता है कि....हे ब्रह्म/तू त्याग पूर्वक भोग कर! ब्रह्म तो पूर्ण है उसमें कोई न्यूनता नहीं है। ''रसेन तृप्तो न कुतश्चनोनः''।। अथर्ववेद १०/८/४४ में ऐसा कहा है। वेदान्त दर्शन के प्रारम्भ में ही ''अथातो ब्रह्म जिज्ञासा'' कहा है अर्थात् मैं ब्रह्म को जानने की इच्छा करता हूँ। यह इच्छा जीवात्मा ही कर सकता है। यदि जीवात्मा का अस्तित्व न मानेंगे तो क्या यह कहेंगे कि ब्रह्म, ब्रह्म को जानने की इच्छा करता है। ऐसा कहनेवाला उपहास का ही पात्र होगा। **अतः ईश्वर-जीव और प्रकृति के इस ''त्रैतवाद'' के सिद्धान्त को स्वीकार करना चाहिए, जो वेदानुकूल है।**

- ३०६, मिल्टन अपार्टमेन्ट, जुहू कोलिवाडा, मुम्बई

समाचार

आर्य समाज कृष्णपोल बाजार एवं आर्य समाज मोती कटला, जयपुर का वार्षिकोत्सव

आर्य समाज कृष्णपोल बाजार स्वयं महर्षि दयानन्द सरस्वती के करकमलों द्वारा संस्थापित राजस्थान का प्रथम व विश्व का द्वितीय आर्य समाज है। इसका १३६ वाँ वार्षिकोत्सव २८ से ३० दिसम्बर २०१२ में मनाया जा रहा है जिसमें चतुर्वेद शतकम पारायण यज्ञ का सम्पादन आचार्य श्री हरिप्रसाद व्याकरणाचार्य,नोयडा के ब्रह्मत्व में सम्पन्न हुआ। इसके अतिरिक्त साध्वी डॉ.उत्तमायति जी,राजस्थान आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री सत्यव्रत सामवेदी, पूज्य स्वामी सुमेधानन्द सरस्वती पीपराली,प्रो.रासासिंह रावत,पूर्व संसद सदस्य,अजमेर, श्री अशोक आर्य, उदयपुर व अन्य विद्वानों का सान्निध्य रहा।

-निवेदक-श्री ओमप्रकाश वर्मा, जयपुर

आर्यवीर दल राजस्थान का विशाल प्रान्तीय आवासीय शिविर

दिनांक २४ दिसम्बर से ३१ दिसम्बर २०१२ तक आर्य समाज केकड़ी(अजमेर) राजस्थान में योग-व्यायाम प्रशिक्षण एवं चरित्र निर्माण के उद्देश्य से आर्यवीरों का प्रान्तीय शिविर लगाया गया। जिसका उद्घाटन व ध्वजारोहण दिनांक २४ दिसम्बर २०१२ सायं ४.०० बजे हुआ।

-सत्यवीर आर्य, प्रान्तीय संचालकआर्यवीर दल, राजस्थान

आर्य मुनि बने स्वामी आर्यानन्द सरस्वती

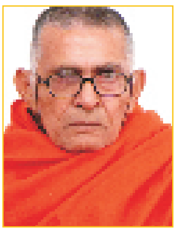

आर्य समाज, फतहनगर, सनवाड, उदयपुर तथा श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास के माध्यम से संपूर्ण क्षेत्र में वैदिक धर्म की अलख जगाने वाले श्री आर्यमुनि जी ने दिल्ली में आयोजित अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन के शुभ अवसर पर स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती जी से संन्यास की दीक्षा ग्रहण की और अपना नाम आर्यानन्द सरस्वती रखा।

परमपिता परमात्मा से प्रार्थना है कि नव दीक्षित स्वामी जी पूर्ण स्वस्थ रहकर पूर्ववत् आर्य समाज की सेवा करते रहें।

-भंवर लाल आर्य, प्रधान आ. स., हिरणमगरी उदयपुर

वेद तथा सत्यार्थ प्रकाश की कथा

आर्य समाज,मोहन नगर हिण्डौन सिटी जिला करौली द्वारा उक्त कार्यक्रम २ दिसम्बर से ३० दिसम्बर २०१२ तक आर्य समाज मंदिर में भव्य रूप में मनाया गया। इस अवसर पर चतुर्वेद पारायण यज्ञ के ब्रह्मा आचार्य श्री कपिल देव शास्त्री गुरुकुल खेडलीगंज,अलवर थे।

-ओमप्रकाश आर्य, हिण्डौन सिटी

आर्य समाज द्वारा प्रदर्शनी की आयोजन

कोटा से २२ किमी.दूर झालावाड रोड पर स्थित आलनिया में आयोजित स्काउट गाइड प्रशिक्षण केन्द्र पर आर्य समाज जिला सभा द्वारा सामजिक सरोकारों को लेकर के पोस्टर प्रदर्शनी लगाई गई थी। प्रदर्शनी में बेटी बचाओ,नेत्रदान,जल है तो कल है, जल ही जीवन है, कन्या भ्रूण हत्या महापाप, पर्यावरण, वृक्षारोपण आदि विषयों पर रंगीन फ्लेक्स पोस्टरों के माध्यम से कर्तव्य बोध करवाया गया।

-अरविन्द पाण्डे, कोट

विद्वानों को आर्य रत्न एवं आर्य विभूषण पुरस्कार

राव हरिशचन्द्र आर्य चेरिटेबल ट्रस्ट,नागपुर की ओर से दिल्ली में आयोजित अन्तर्राष्ट्रीय महासम्मेलन के अवसर पर

१.पूज्य स्वामी सत्यपति जी परिवाजक
२.पूज्य स्वामी दिव्यानन्द जी,हरिद्वार
३.पूज्य स्वामी प्रणवानन्द जी, गुरुकुल गौतम नगर, दिल्ली
४.पूज्य आचार्य प्रद्युम्न जी,गुरुकुल खानपुर
५. पूज्य आचार्य विजयपाल जी गुरुकुल झज्जर को 'आर्य रत्न' एवं
१. माननीय श्री शोभराम जी आर्य प्रेमी,मेरठ
२. मानननीय श्री ओमप्रकाश जी वर्मा,यमुनानगर,
३. माननीय डॉ.सुन्दरलाल जी कथूरिया, दिल्ली
४. माननीय आचार्य बिशिकेशनशास्त्री,वरीकेल,उडीसा
५. माननीय डॉ. विनोद चन्द्र विद्यालंकार, ज्वालापुर को 'आर्य विभूषण' पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

पगड़ी-शॉल-श्रीफल-अभिनन्दन पत्र व स्मृति चिह्न के अतिरिक्त आर्य रत्न पुरस्कार के अंतर्गत प्रत्येक महामना को एक लाख रु. व आर्य भूषण पुरस्कार के अंतर्गत २१००० रु. ट्रस्ट के मेनेजिंग ट्रस्टी राव हरिशचन्द्र आर्य द्वारा प्रदान किए गए।

इस शुभ कार्य के लिए राव साहब बधाई के पात्र हैं।

परमपिता परमात्मा से प्रार्थना है कि सभी पुरस्कृत मान्य विभूतियाँ दीर्घकाल तक आर्य समाज को अपना मार्गदर्शन देती रहें। सभी विद्वानों को सत्यार्थ-सौरभ परिवार की ओर से बधाई एवं शुभकामनाएँ।

स्वर्गीय वानप्रस्था गुलाबीदेवी आर्या की भव्य प्रतिमा का अनावरण समारोह

दानवीर वानप्रस्थ सत्य नारायण जी आर्य की स्वर्गीया पत्नी की स्मृति में १६ दिसम्बर २०१२ को उनकी भव्य प्रतिमा का स्थापन एवं अनावरण आर्य समाज सत्संग भवन निम्बीखुर्द तहसील डीडवाना में आर्य जगत् के सुप्रसिद्ध संन्यासी स्वामी सुमेधानन्द सरस्वती, वैदिक आश्रम पीपराली द्वारा गुरुकुल हरिपुर के प्रतिष्ठाता डॉ.सुदर्शन देव आचार्य एवं समाजसेवी श्री गोपाल सोमानी, सीकर, श्री प्रेमप्रकाश आर्य एवं अन्य साधु संतों और प्रतिष्ठित विद्वानों की उपस्थिति में किया गया।

-वानप्रस्थ सत्यनारायण आर्य,मेनेजिंग ट्रस्टी

महाकुम्भ प्रयाग के अवसर पर वैदिक धर्म का प्रचार

पौराणिक मतावलम्बियों के विशाल मेले में १३ जनवरी से २५ फरवरी तक अनवरत् रूप से शिविर लगाकर वैदिक ज्ञान की धारा को लगातार प्रवहमान रखा जावेगा। इस कार्यक्रम में यज्ञ,भजन,प्रवचन,वेद-कथा,योग,सामयिक चर्चाएँ तथा अध्यात्म-चिन्तन होगा। इस महाकुंभ में देश विदेश से लाखों आर्यजन पधार रहे हैं जिनके भोजन व आवास की व्यवस्था आर्य समाज कृष्णनगर, प्रयाग द्वारा निःशुल्क की जावेगी।

इस अवसर पर वैदिक ज्ञान कुम्भ के नाम से एक स्मारिका का प्रकाशन किया जा रहा है। आर्य समाज की ओर से इसके लिए सहयोग आमंत्रित है।

- संपर्क सूत्र,आर्य राजेन्द्र(कपूर)
मंत्री आर्य समाज,मुण्डेरा बाजार (मो.)०९८८९४८२४८९

पिपराली में कार्यकर्त्ता सम्मेलन

१४ दिसम्बर २०१२। आ. प्र. सभा राज. के प्रधान श्री सत्यव्रत सामवेदी की अध्यक्षता में हुआ। जिसमें स्वामी सुमेधानन्द जी, पं. अमरमुनि वानप्रस्थादि विशिष्ट अतिथि थे।

हलचल

मुस्लिम बहुल क्षेत्र में गूँजा वन्देमातरम्
बाबू मिश्रीलाल आर्य कन्या इण्टर कालेज का चमत्कार
मुस्लिम बालक बालिकाएँ पा रहे है शिक्षा 'वैदिक परिवेश' में

गत मास आर्य समाज टाण्डा तथा बाबू मिश्रीलाल आर्य इण्टर कालेज टाण्डा के वार्षिकोत्सव के अवसर पर टाण्डा जाने का सौभाग्य मिला। टाण्डा अयोध्या से ५० कि.मी. दूर ५०-६० हजार जनसंख्या वाला ऐसा कस्बा है जहाँ पावरलूम का जबर्दस्त व्यवसाय है तथा ६० प्रतिशत जनसंख्या मुस्लिम है। ऐसे माहौल में श्री आनन्द कुमार आर्य (उपप्रधान-सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा) के पूज्य पिता ने एक आदर्श शिक्षण संस्था की नींव डाली। उनके अथक परिश्रम का फल यह रहा कि आज इस संस्था में ३००० बालिकाएँ पढ़ती हैं। गर्व की बात यह है कि इस आर्य संस्था में २००० बालिकाएँ मुस्लिम हैं। आनन्द बाबू ने इसे और विस्तार दे, डी.ए.वी. ऐकेडमी की स्थापना की है जहाँ भी ६०० बच्चों में से ४०० मुस्लिम हैं।

एक बालिका ने जब मुझे नमस्ते कह अभिवादन किया तो मैने उससे कुछ बातें कीं जिनका उत्तर इस प्रकार था-

१. बड़ी आयु की मुस्लिम छात्राएँ बुरका पहन कर विद्यालय आती हैं परन्तु विद्यालय में बुरका उतार कर रख देती हैं।
२. सभी निःसंकोच यज्ञ में भाग लेती हैं, वेदमंत्र बोलती हैं।
३. इस विद्यालय को उनके माता-पिता भी मदरसों से श्रेष्ठ मानते हैं।
४. वे घर पर सलामवालेकुम कह अभिवादन करती हैं तो विद्यालय में नमस्ते।
५. उन्हें अपने विद्यालय पर गर्व है।

वार्षिकोत्सव में हमारे पहुँचने से पूर्व २५ तारीख को शोभायात्रा निकली। श्री आर.डी. गुप्त (प्रधान, आ.स. दयानन्द नगर, गाजियाबाद) ने मुझे बताया कि शोभायात्रा बड़ी शानदार निकली। आश्चर्य यह था कि जहाँ देश के अन्य हिस्सों में सामान्यतः मस्जिद के सामने बाजा बजाने तथा नारे लगाने पर ऐतराज किया जाता है वहाँ टाण्डा में शान से 'मस्जिद की मीनारों पर लहरायेगा झण्डा प्यारा ओ३म् का' गाया गया। पूरा कस्बा मानो घर से बाहर निकलकर शोभायात्रा का स्वागत कर रहा था।

यहीं एक पुरानी घटना बतायी गयी। राम जन्मभूमि आन्दोलन के समय टाण्डा में भी कर्फ्यू लगा था। आर्य समाज की शोभायात्रा निकलने को थी। तब मुस्लिम समुदाय के पुरजोर अनुरोध पर स्थानीय प्रशासन ने शोभायात्रा के लिए २ घण्टे की मोहलत दी तथा शोभायात्रा निकली।

बच्चों के भव्य कार्यक्रम का संचालन कर रहीं, शुद्ध हिन्दी बोल रहीं अध्यापिका से जब मिला तो आश्चर्य हुआ। उनका नाम श्रीमती रूखसाना बानो था। वे रसायन विज्ञान की प्रवक्ता हैं। उन्होंने बताया कि उनके पति वहाँ व्यापार करते हैं उनकी इस विद्यालय की नौकरी से सारा परिवार प्रसन्न है। यह तीन दिनों का प्रवास शानदार कार्यक्रमों तथा आनन्द बाबू के आतिथ्य के कारण यादगार बन गया। अन्त में गद्‌गद् मन से आनन्द बाबू के पिता स्व. मिश्रीलाल आर्य के प्रयासों को बारम्बार नमन करते हुए उसी पथ पर चल रहे आनन्द बाबू के लिए पूर्ण आरोग्य व लम्बी उम्र की कामना करता हूँ।

-भवानी दास आर्य, मन्त्री-न्यास

प्रतिस्वर

समादरणीय श्री अशोक जी, सादर नमस्ते।

आपकी पत्रिका ''सत्यार्थ सौरभ'' अपने कलेवर विषय वस्तु तथा चित्रित रूप में अतीव सुन्दर है। सभी प्रकरण, वेद सुधा, आत्म-निवेदन, दृष्टिकोण, तथा स्वास्थ्य आदि पठनीय हैं। ''वेद सुधा'' का स्तर श्रेष्ठ व स्तुत्य है। एक पूर्ण लेख के रूप में ''वेद सुधा'' का विषय-विवेचन स्वाध्याय हेतु सराहनीय है। गत अंको में महर्षि के स्वानुभूत ओषध प्रयोग बहुत अच्छे लगे। इस प्रकरण से पत्रिका सीधे महर्षि से जुड़ती है। अतः छपाई, कागज व विषय सामग्री ऐसी ही बनायें रखें यह अभिलाषा है।

मुझे आपकी पत्रिका अप्रैल १२ से ''सत्यार्थ-सन्देश व सत्यार्थ सौरभ'' के रूप में प्राप्त होती रही है, जब आप भरतपुर पधारे थे। आप श्रद्धेय प्रेमभिक्षु जी(आपके पूज्यपाद पिता श्री) के कार्य को आगे बढ़ाकर हम सभी को गौरवान्वित कर रहे हैं।

- रामसिंह वर्मा, भरतपुर

कोटानगर में वेद ज्ञान की गंगा बही

२८ से ३१ अक्टूबर तक कोटा नगर के विभिन्न मोहल्लों में विभिन्न परिवारों में यथा अंजली विहार, पूनम कॉलोनी तथा वल्लभ वाडी में वैदिक सत्संग उत्सव का आयोजन रहा। इस अवसर पर सुप्रसिद्ध वैदिक विद्वान् आचार्य आनन्द पुरुषार्थी, आचार्य विश्वामित्र विद्यार्थी तथा दिनेशदत्त आर्य व कुलदीप आर्य के प्रेरणास्पद सम्बोधन से श्रोतागण अभिभूत हुए। कार्यक्रम के संयोजन के केन्द्र में श्री राजेन्द्र आर्य, श्री मिश्रीलाल आर्य व श्री राजेन्द्र सक्सेना थे। इस प्रकार के प्रचारात्मक कार्यक्रम से प्रेरणा लेकर अन्य आर्यों ने भी भविष्य में ऐसे कार्यक्रम करवाने का व्रत लिया।

- राजेन्द्र आर्य, कोटा

आर्य समाज,सिविल लाइन्स,अलीगढ़ का वार्षिक महोत्सव सम्पन्न

१८ से २१ नवम्बर २०१२ में अनेक रचनात्मक व क्रियात्मक कार्यों को समाहित करते हुए उक्त महोत्सव भव्य रूप में मनाया गया। पंडित राजपाल शास्त्री,पंडित सुरेन्द्र शास्त्री, भजनोपदेशक कुलदीप विद्यार्थी महोपदेशक डॉ.रूपचन्द्र दीपक तथा आचार्य ब्रह्मदेव शास्त्री के निर्देशन में संपूर्ण कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

प्रभातफेरी,योगशिविर एवं स्वास्थ्य शिविर के अतिरिक्त सत्यार्थ प्रकाश व संस्कार विधि पर प्रतियोगिता उल्लेखनीय रही। इस अवसर पर आर्य पितृ दिवस के दिन में श्री सुरेन्द्र पाल का,आर्य मातृदिवस के दिन में श्रीमती विमलेश आर्या का,आर्य युवक दिवस के दिन में श्री सत्यप्रकाश आर्य एवं आर्य राष्ट्रीय दिवस के दिन श्री रघुराज सिंह आर्य का सम्मान किया गया। प्रसिद्ध लेखक पंडित देवनारायण भारद्वाज इस कार्यक्रम के निर्देशक रहे।

- डॉ.पपेन्द्र आर्य, मंत्री

सत्यार्थ-पीयूष अंधविश्वासों से दूर रहें

माता पिता जहाँ अपनी सन्तान को ग्रहण करने योग्य बातें सिखायें, वहाँ यह भी आवश्यक है कि उन्हें अनेक प्रकार के मिथ्या विश्वासों, भूतप्रेत विषयक मूर्खतापूर्ण धारणाओं तथा विज्ञान एवं सृष्टिक्रम-विरुद्ध मान्यताओं के जाल में फँसने से बचायें। भूतप्रेतों, डाकिनी, शाकिनी, एवं योगिनी आदि कल्पित योनियों के प्रति अंधविश्वास यों तो संसार के सभी देशों में पाया जाता है, किन्तु भारत की धरती इसके लिए अधिक उर्वरा सिद्ध हुई है।

भूतप्रेत तथा मृत व्यक्तियों की अशान्त आत्माओं द्वारा संसारी लोगों को पीड़ित करने के झूठे किस्से जनसाधारण में तो शास्त्रवाक्यों की भांति सत्य समझे ही जाते हैं। प्रायः देखा जाता है कि सुपठित तथा शिक्षित व्यक्ति भी इन मूर्खतापूर्ण धारणाओं के जाल से स्वयं को मुक्त नहीं कर पाते। ऋषि दयानन्द ने इस प्रसंग में मनुस्मृति के निम्न श्लोक को उद्धृत कर यह स्पष्ट कर दिया कि प्रेत शब्द वैदिक एवं आर्ष शास्त्रों में मृत व्यक्ति का वाचक है, न कि किसी भयावनी योनि विशेष का। श्लोक इस प्रकार है-

गुरो प्रेतस्य शिष्यस्तु पितृमेधं समाचरन्। प्रेतहारैः समं तत्र दशरात्रेण शुद्ध्यति।। (मनु० ५/६५)

यहाँ प्रेत शब्द मृतक शरीर का वाचक है जब कि प्रेतहार उन व्यक्तियों के लिए प्रयुक्त हुआ है जो मृत शरीर को उठाकर श्मशान तक ले जाते हैं। मनुस्मृति के टीकाकार कुल्लूक भट्ट ने भी 'प्रेतस्य' का अर्थ 'मृतस्य' ही किया है। इसी प्रकार संस्कृत का 'भूत' शब्द भी अनेकार्थवाची तो है, किन्तु उससे किसी डरावनी योनि विशेष का अर्थ लेना उचित नहीं। संस्कृत साहित्य में भूत-जो हो चुका, उत्पन्न, निर्मित, अतीत, जीवित प्राणी, जड़ तत्व आदि के अर्थों में आता है। शास्त्रों में भूतात्मा का प्रयोग जीवात्मा के लिए हुआ है। मनु जब विद्या और तप से भूतात्मा की शुद्धि की बात करते हैं। (५/१०६) तो टीकाकार कुल्लूक भट्ट इसका अर्थ (सूक्ष्मादिलिंगशरीरावच्छिन्नो जीवात्मा) करता है। उपनिषदों में 'भूतेषु भूतेषु विचिन्त्य धीराः' का प्रयोग मिलता है। यहाँ सभी प्राणियों के लिए भूत शब्द का प्रयोग हुआ है।

प्रायः देखा जाता है कि अनेक प्रकार के मानसिक रोगों के कारणों को न समझकर लोग ऐसे रोगियों में भूतप्रेत आदि हानिकारक योनियों का आवेश मान लेते हैं तथा मनोवैज्ञानिक चिकित्सा न करा कर अनेक प्रकार के मंत्र तंत्र पुरश्चरण आदि अपकृत्यों द्वारा रोगी का उपचार कराते हैं। इस प्रसंग में ऋषि ने स्पष्ट किया है कि सन्निपात आदि शारीरिक और उन्माद आदि मानस रोगों के मूल कारणों का निदान न कर सकने के कारण अज्ञानी लोग यह मान लेते हैं कि रोगी में भूत-प्रेत, चुड़ैल आदि का प्रवेश हो गया है। वस्तुतः संस्कृत भाषा में भूतप्रेत से भिन्न यक्ष, राक्षस, पिशाच, नक्तंचर (निशाचर) आदि अन्य शब्द भी हैं जो जन सामान्य में अपयोनियाँ मानी जाती हैं। किन्तु यदि इनके व्युत्पत्तिलभ्य अर्थों का विचार किया जाये तो इनसे ऐसे जीव जन्तुओं, कीटाणुओं तथा रोग उत्पन्न करने वाले क्रिमियों का अभिप्राय लेना होगा जो मनुष्य शरीर को हानि पहुचाते हैं। रोग उत्पन्न करने वाले सूक्ष्म कृमि तथा विषाणु ही राक्षस, यातुधान तथा पिचाश हैं। ऐसे रक्षगणों (राक्षसों) को नष्ट करने वाला वैद्य ही राक्षोदा कहलाता है। इस विचार की पुष्टि पाश्चात्य लेखकों ने भी की है। बैबिलोनिया और असीरिया की मिथक कथाओं का विवेचन करने वाला विद्वान् डोनाल्ड मैकेंजी लिखता है "Germs of diseases were depicted by lively imagination as invisible demons who derived nourishment from the human body. (सत्यार्थ प्रकाश, भाष्य, पं. वाचस्पति लिखित से उद्धृत पृ. ११६) अर्थात् विभिन्न रोग उत्पन्न करने वाले क्रिमियों की अदृश्य राक्षसों के रूप में कल्पना कर ली गई। ये राक्षस कहलाने वाले क्रिमि शरीर से ही पोषण प्राप्त करते हैं।

तथापि यह स्वीकार करना होगा कि भूत-प्रेत आदि के नाम पर उल्लू सीधा करने वाले पाखण्डी लोगों की भी इस संसार में कमी नहीं है। ऐसे दुष्ट प्रकृति के लोग भोले भाले लोगों की अंधविश्वासजन्य प्रकृति का लाभ उठाकर अपने स्वार्थ की सिद्धि करते हैं। ऐसे तथाकथित ओझा तथा झाड़फूँक करने वाले लोगों को स्वामी दयानन्द धूर्त, महामूर्ख, पाखण्डी, अनाचारी तथा स्वार्थी कहते हैं तथा जन साधारण को इनसे बचने का उपदेश देते हैं। भूत-प्रेत आदि के मिथ्या प्रवादों को फैलाने तथा इससे अपना स्वार्थ सिद्ध करने में कभी कभी ऐसे लोग भी सहायक सिद्ध होते हैं जिनसे हम इस प्रकार के अधंविश्वासों को प्रचारित करने की आशा भी नहीं रखते। आज के सनसनीखेज पत्रकारिता के युग में अनेक पत्र पत्रिकायें भूत-प्रेत विशेषांक प्रकाशित करती हैं। यंत्र मंत्र डोरा धागा ताबीज आदि के बहाने लोग अपनी दूकानदारी चलाते हैं। हिन्दी की प्रसिद्ध मासिक पत्रिका वर्ष में एक बार भूत-प्रेत विशेषांक निकालती है जिसमें कपोल कल्पित कहानियों के द्वारा पाठकों को अंधविश्वासी बनाया जाता है। कहानी पत्रिका मनोहर कहानियाँ भी ऐसे विशेषांक प्रकाशित करती है। ऋषि दयानन्द की सम्मति में ऐसे पाखण्डों का सर्वथा उन्मूलन तभी सम्भव है जब जनसाधारण में जागरूकता पैदा की जाय। इसके लिए मनुष्य के चिन्तन और विचार में आमूलचूल क्रान्तिकारी परिवर्तन लाना आवश्यक है। मानव जब तक अपने में वैज्ञानिक सोच पैदा नही करता तथा प्रत्येक विचार तथा कृत्य को तर्क की कसौटी पर कसता नहीं, तब तक बौद्धिक विकास में बौना ही रहता है।

बालकों का चित्त अत्यन्त कोमल तथा प्रत्येक प्रकार के संस्कार को ग्रहण करने में प्रवृत्त रहता है। यदि बाल्यकाल में उनको भूत-प्रेतों की कल्पित कहानियाँ सुनाई जायें तो आगे चलकर वे इस प्रकार के अधंविश्वासों से कभी मुक्त नही होंगे। **इसलिए माता-पिता का यह आवश्यक कर्त्तव्य हो जाता है कि वे सन्तान के कानों में ऐसी मिथ्या विश्वासपूर्ण कथायें पड़ने ही न दें।** जहाँ ओझा और भूत-प्रेत का निवारण करने वाले ढोंगी पुरुष अपनी स्वार्थ सिद्धि के लिए मनोवैज्ञानिक रोगों से ग्रस्त स्त्री-पुरुषों की चिकित्सा के बहाने अनेक प्रकार के पाखण्ड रचते हैं तथा उनसे देवता की भेंट तथा प्रसाद के नाम पर धनहरण का षड़यन्त्र रचते हैं, वहाँ स्वामी दयानन्द की बताई युक्ति का प्रयोग ही समीचीन है। महाराज का यह स्पष्ट आदेश है कि जो कोई बुद्धिमान उनकी भेंट पाँच जूता, दण्डा, व चपेटा लात मारें तो उनके हनुमान, देवी और भैरव झट प्रसन्न होकर भाग जाते हैं। क्योंकि वह उनका केवल धनादि हरण करने के प्रयोजनार्थ ढोंग है।

फलित ज्योतिष तथा ग्रह शान्ति का पाखण्ड

बच्चों को जहाँ भूत प्रेतादि के कल्पित भय से दूर रखना आवश्यक है वहाँ यह भी जरूरी है कि वे भाग्यवादी न बन कर पुरुषार्थवादी बनें। भारत में जहाँ भूगोल, खगोल तथा ज्योतिष आदि वैज्ञानिक अध्ययनों का विकास हुआ वहाँ फलित ज्योतिष, फलादेश, भविष्य कथन, हस्तरेखा, सामुद्रिक-शास्त्र जैसे पाखण्डपूर्ण विधि विधानों का भी प्रचलन हुआ जो मनुष्यों को परिश्रम तथा अध्यवसाय से विमुख कर मात्र भाग्य पर निर्भर रहना सिखाते हैं। फलित ज्योतिष का ही एकअंग जन्मपत्र बनाना तथा फलादेश सुनाना है। गणित ज्योतिष एक परिपूर्ण विज्ञान है जो गणितीय प्रक्रियाओं से वैज्ञानिक निष्कर्ष निकालता है जबकि फलित सर्वथा कपोल कल्पित तथा युक्ति एवं तर्क विरुद्ध वाग्जाल मात्र पाखण्ड है। इन फलितज्ञ ज्योतिषियों को स्वामी दयानन्द ने ज्योतिर्विदाभास कहा है। भोले भाले गृहस्थों के द्रव्यापहरण का षड़यंत्र रचकर वे स्वनिर्मित जन्मपत्र का वाचन करते हैं और क्रूर ग्रहों का भय दिखलाकर उनकी शान्ति के लिए विभिन्न प्रकार के पूजा-पाठ दान आदि करवाते हैं।

तथ्य तो यह है कि पृथ्वी की ही भाँति सूर्य, चन्द्र, मंगल, बुध, शनि आदि सभी ग्रह जड़ हैं तथा वे मनुष्य के भाग्य का फैसला करने में असमर्थ हैं। वेदमंत्रों के वास्तविक भाव को न समझ कर मध्यकालीन आचार्यों ने जब वैदिक यज्ञों को जटिल कर्मकाण्ड बहुल तथा मात्र शब्द साम्य के आधार पर अनेक निरर्थक कर्मों में मंत्रों के विनियोगों का विधान किया तो नवग्रहों की पूजा में कतिपय मंत्रों को नियोजित कर दिया गया। उदाहरणार्थ सविता देवता का मंत्र 'आ कृष्णेन रजसा' (यजु ३३/४३)

सूर्य का वाचक माना गया तो 'उद्बुध्यस्वाग्ने' (यजु १५/५४) को 'बुध' का बोधक स्वीकार किया गया। सर्वाधिक हास्यास्पद तो 'शनि' के लिये विनियुक्त मंत्र व्यवस्था थी, क्योंकि 'शन्नो देवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये। शंयो रभिस्रवन्तुनः (यजु ३६/१२)' में प्रयुक्त 'शं नो' पद जहाँ हमारे लिये कल्याण और मंगल का अर्थ देते हैं वहाँ उन्हें एक ही मान कर शनैश्चर के लिए प्रयुक्त मान लिया गया। ऐसे विनियोग रूप समृद्ध नहीं थे।

इस प्रकार फलित ज्योतिष के छलावे और प्रपञ्च का रहस्योद्घाटन कर ऋषि दयानन्द ने स्पष्ट किया कि ज्योतिष शास्त्र तो मिथ्या नहीं है क्योंकि उसके अन्तर्गत अंकगणित, रेखागणित, बीजगणित, खगोल विद्या तथा अन्तरिक्ष विद्या आदि जो विषय आते हैं वे तो सभी विज्ञान के अनुकूल हैं जब कि ग्रहों के क्रूर अथवा सौम्य होने तथा किसी व्यक्ति के भाग्य में निर्णायक होने का विचार सर्वथा मिथ्या एवं प्रमाण रहित है। अपने क्षुद्र स्वार्थ की पूर्ति के लिये इन तथाकथित ज्योतिषियों ने अनेक कपोल कल्पित श्लोकात्मक ग्रन्थ भी बनाये जिनमें ऐसी ऐसी मिथ्या बातें लिखी हैं मानों आदमी का भूत वर्तमान और भविष्य सब कुछ इन ज्योतिषियों के ही अधिकार में है। यथा एक फलित ग्रन्थ में लिखा है-

शनिक्षेत्रे यदा भानुः भानुक्षेत्रे यदा शनि।
सदा एव भवेन्मृत्युः शंकरो यदि रक्षति।।

अर्थात् शनि के क्षेत्र में सूर्य हो और सूर्य के क्षेत्र में शनि हो तो बालक होते ही मर जायेगा, चाहे साक्षात् शंकर ही उसके रक्षक क्यों न हों?वस्तुतः यह सारा पाखण्ड और प्रपञ्च गृहस्थियों के धन का हरण करने के लिए ही रचा गया था। फलित के नाम पर चलने वाले पाखण्ड को ही दृष्टि में रखकर आर्षप्रज्ञा के धनी आचार्य विष्णुगुप्त ने अपने अर्थशास्त्र में लिखा था-

नक्षत्रमति पृच्छन्तं बालमर्थो ऽतिवर्तते।
अर्थो ध्यर्थस्यं नक्षत्रं किं करिष्यन्ति तारकाः।। (६/१४२/४)

अर्थात् नक्षत्रों के फल को पूछने वाला राजा बाल बुद्धि ही है। वह अपने अभीष्ट फल को कदापि प्राप्त नहीं कर सकता क्योंकि अर्थ की बुद्धि के लिए तो पुरुषार्थ अपेक्षित होता है। ये तारे (ग्रह) हमारा क्या हानि लाभ करेंगे?

इस प्रकार फलित ज्योतिष, ग्रहशान्ति आदि पाखण्ड जाल को छिन्न भिन्न कर जन्म पत्र को शोक पत्र बता ऋषि दयानन्द ने मानव को तर्कसिद्ध विचारों को स्वीकार करने और पुरुषार्थ युक्त जीवन यापन करने का परामर्श दिया।

फलित ज्योतिष की ही भाँति शीतला जैसे अप-देवी-देवताओं की पूजा अर्चना आदि को भी पाखण्ड ही मानना चाहिए। हमारे देश में तो चेचक जैसी छूत की बीमारियों को भी शीतला जैसी कल्पित देवी के प्रकोप का परिणाम माना जाता है। ऐसे रोगों की समुचित चिकित्सा कराने की अपेक्षा अज्ञानी लोग डोरा, गण्डा और ताबीज के चक्कर में पड़ते हैं जिससे रोगी का मृत्युमुख गामी होना अवश्यम्भावी हो जाता है।

- संपादक-अशोक आर्य, नवलखा महल, उदयपुर

❑❑❑

न्यास द्वारा समस्त संस्कारों हेतु समुचित व्यवस्था

जीवन में उदात्त नैतिक मूल्य स्वयमेव स्थापित नहीं होते, भागीरथ प्रयत्न करना होता है। भारतीय मनीषा ने इस हेतु १६ संस्कारों का विधान किया है। जो प्रत्येक गृहस्थ को करवाने चाहिए। कई सज्जनों को लगता है कि यह कठिन तथा व्यय-साध्य कार्य है। हमारा निवेदन है कि ऐसा कुछ नहीं है। संस्कार चित्त-प्रसाद-अभिवृद्धि का हेतु है। आप केवल दूरभाष पर अपनी अभिलाषा बतावें। न्यास के पुरोहित पंडित नवनीत आर्य सारा कार्य, स्वतः व्यवस्था कर सुन्दरता से सम्पन्न करायेंगे।

दूरभाष : ०२६४-२४१७६६४, चलभाष ०९३१४५३५३७९

कृपया न्यास की वेबसाईट : www.satyarthprakashnyas.org पर अवश्य देखें

पत्रिका से सम्बन्धित किसी प्रकार की जानकारी/शिकायत के लिये निम्न चलभाष पर सम्पर्क करें।
09314535379

प्रत्येक माह की 20 तारीख तक भी पत्रिका न मिलने पर कृपया इसी चलभाष पर सम्पर्क करें।

सुभाष-जयन्ती पर विशेष

खूनी हस्ताक्षर

Azad Hind

वह खून कहो किस मतलब का जिसमें उबाल का नाम नहीं,
वह खून कहो किस मतलब का आ सके देश के काम नहीं.
वह खून कहो किस मतलब का जिसमें जीवन ना रवानी है,
जो परवश होकर बहता है वह खून नहीं है पानी है.
उस दिन दुनिया ने सही सही खून की कीमत पहचानी थी,
जिस दिन सुभाष ने बर्मा में मांगी उनसे कुर्बानी थी.
बोले स्वतंत्रता की खातिर बलिदान तुम्हें करना होगा,
तुम बहुत जी चुके हो जग में लेकिन आगे मरना होगा.
आज़ादी के चरणों में जो जयमाल चढ़ाई जायेगी,
वह सुनो तुम्हारे शीशों के फूलों से गूँथी जायेगी.
आज़ादी का संग्राम कहीं पैसे पर खेला जाता है?
यह शीश कटाने का सौदा नंगे सर झेला जाता है.
आज़ादी का इतिहास कहीं काली स्याही लिख पाती है?
इसको लिखने के लिए खून की नदी बहाई जाती है.
यह कहते कहते वक्ता की आँखों में लहू उतर आया,
मुख रक्त वर्ण हो दमक उठा दमकी उनकी रक्तिम काया.
आजानुबाहू ऊँची करके वो बोले रक्त मुझे देना,
इसके बदले में भारत की आज़ादी तुम मुझसे लेना.
हो गयी सभा में उथल-पुथल सीने में दिल ना समाते थे,
स्वर इन्कलाब के नारों के कोसों तक छाये जाते थे.
हम देंगे-देंगे खून शब्द बस यही सुनाई देते थे,
रण में जाने को युवक खड़े तैयार दिखाई देते थे.
बोले सुभाष ऐसे नहीं बातों से मतलब सरता है,
लो यह कागज़ है कौन यहाँ आकर हस्ताक्षर करता है?
इसको भरने वाले जन को सर्वस्व समर्पण करना है,
अपना तन-मन-धन जीवन माता को अर्पण करना है.
पर यह साधारण पत्र नहीं आज़ादी का परवाना है,
इसपर तुमको अपने तन का कुछ उज्ज्वल रक्त गिराना है.
वह आगे आये जिसके तन में भारतीय खून बहता हो,
वह आगे आये जो अपने को हिंदुस्तानी कहता हो.
वह आगे आये जो इसपर खूनी हस्ताक्षर देता हो,
मैं कफ़न बढ़ाता हूँ आये, जो हँसकर इसको लेता हो.
सारी जनता हुंकार उठी हम आते हैं हम आते हैं,
माता के चरणों में यह लो हम अपना रक्त चढाते हैं.
साहस से बढे युवक उस दिन, देखा बढ़ते ही आते थे,
चाकू-छुरी कटियारों से वो अपना रक्त गिराते थे.
फिर उसी रक्त स्याही में वो अपनी कलम डुबाते थे,
आज़ादी के परवाने पर वो हस्ताक्षर करते जाते थे.
उस दिन तारों ने देखा हिंदुस्तानी इतिहास नया,
जब लिखा महा रणवीरों ने खून से अपना इतिहास नया.

– कवि श्री गोपाल प्रसाद व्यास (साभार)

मानचित्र पैमाने के अनुसार नहीं है।

DAYANANDA-THE WORLD TEACHER

Dr. (Prof.) Madan Mohan Jawliya

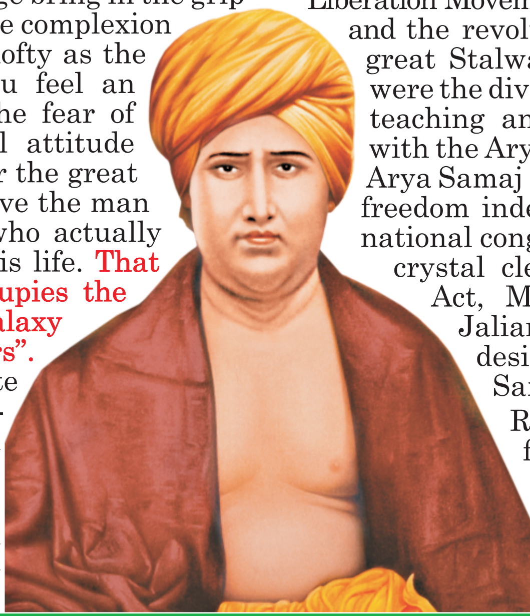

"Whenever you feel feebleness of physique and mind, you remember a robust and patriot Gujarti, "Whenever worldly joy, wealth and lustre make you heart blind, you remember that great Brahamachari who kicked away the enticement. Whenever defeat exhausts your treasure of courage bring in the grip of your imagination the complexion of the personality as lofty as the Himalayas. When you feel an extreme presure of the fear of death and revengeful attitude you foo, you remember the great Dayananda who forgave the man who attempted and who actually did bring an end to his life. **That great Dayananda occupies the first seat among the galaxy of the world teachers".** Thus pays the tribute Shri Ramanlal Desai- a prominent Gujarati Novelist.

"Dayananda was the first to proclaim in an unequivocal voice that India was for the Indians," says Mrs. Anni Besant. Dadabhai Naoroji an elder statesmen, asserted, ' he learnt the word 'SWARAJYA' and its under-lying philosophy from "Satyartha Prakash of Rishi Dayananda." It was Dayananda alone who denounced the foreign rule and held it responsible for our present day catastrophe and demoralisation. It is an established fact that the Rishi was an active force behind the 1857 mutiny. Tantiya Tope, the great martyr was in close contact with the Rishi on the picturesque banks of the Narmada River.

Swami Dayananda saw the failure of the mutiny.He was convinced that the Indian princly states had not joined the sacred cause of freedom movement, and the public as a whole was not imbibed with the nectar of nationalism. So he resolved to eradicate the two diseases. And we find in his later life that he devoted a major part of his precious time in Rajasthan and Punjab.

Rishi Dayananda was the source whence originated the two streams of National Liberation Movements- the constitutional and the revolutionary. Most of the great Stalwarts of the revolution were the dived off- shoots of Rishi's teaching and they were infused with the Arya Samaji spirit. It was Arya Samaj along which fought for freedom independently before the national congress took over. It was crystal clear that the Rawlatt Act, Martial Law and the Jalianawala episode were designed to suppress Arya Samaj in the Punjab.

Rishi's vigilance and foresight deserve apprecation when he gave priority in starting Arya Samaj Societies at Danapur, Lahore, Neemuch, Peshawar, Dehradum, Roorkee, Meerut and such other places as were the militery strong-holds. **The under-lying idea was to prepare the civil and the military population of the places to risein revolt against the foreign rules.** The Maharaja of Jodhpur was asked by the then viceroy to severe his connections with the Rishi. It was also a fact that the British Resident in Jodhpur was also an active participant in the plot against Rishi's life.

Dayananda was a man of versatile activities. He believed in action based on truth and righteous-ness. He lived and died for the truth. No compromise at the cost of truth was acceptable to him. He declared that the Vedas were the eternal

store housess of Divine Knowledge. He was a great orator. The reform of the living-beings was his aim. So his eloquence was not bereft of actual service of mankind, living beings and environment in their totality.

Greatness does not vest in success in the political sphere as some interested and the so-called great men believe. It does not lie in the cheap popularity achieved among the illiterate masses. There are many unscrupulous and so-called world teachers who were actually illiterate both literally and spiritually, or figure-among-biphers. Obviously these imitation great men are no match to Dayananda. They are dwarfs in his presence as Arvind, the great Yogi says, **"If all the great men of the world assemble at one place and assume to be lofty peaks, the loftiest summit visible will be that of Dayananda"**

Dayananda introduced no religion of his own. He preached the fundamentals of the Vedas – the knowledge conferred by God in the very beginning of the creation. About his contribution, Dayananda will be honoured as the first discoverer of the right clues. Amidst the chaos and obscurity of old ignorance and age-long misunderstanding his was the eye of the direct vision, that pierced to the truth. He had found the key of the door that time had closed and set as under the seals of the imprisoned foundains."

Romain Rolland, the famous French writer pays a glowing tribute to Dayananda in the following words, "Dayananda Saraswati was a personalty of the highest order. He was that rare combination – a thinker of action with a genius of leadership. He transfused in to the languid body of India his own formidable energy, his lion's blood. He was the most vigorous force of the immidiate and present action in India at the time of the rebirth and reawakening of the national consciousness. He was the most ardent prophet of reconstruction and of national reorganisation."

Ravindra Nath Tagore, the poet laureate of India, bows to the magnanisity of the Rishi in these words, " I offer my homage of veneration to Swami Dayananda, the great pathmaker in modern India who through bewildering tangles of creeds and practices, the dense undergrowth of the degenerate days of our country cleared a straight path." To this Dr. Vasu Deo Sharan adds, Dayananda is like an eternal Himalaya whence streams, innumerable and incessant, of national and universal rejuvenation, have sprung up and are irrigating various fields of humanity." Scores of such opinions and tributes to that Rishi might be put forth to reveal his real image. but I would like to end this channel of tributes by inserting only that of Gandhi, who after showing great regard for Rishi Says, " I envy his Brahmacharya at once a despair"

Arya Samaj Society, a sort of Banyan tree, was planted by him as his successor. **It is a fact that wherever Arya Samaj exists, there has been a marvellous elevation of the masses and classes.** In the field of education, it stands second to the Government only. It has done a marvellous work in national liberation, and creditable work of liberation and uplift in Kenya, South Africa, Guinea, Figi, Tanzania and Mauritius. Rishi's 'Satyartha Prakash' is sacred for the Hindus as the Bible is to Christians.

In short Dayananda service to the freedom of India, the untouchables, the widows, the depressed, Hindi and Sanskrit, Solidarity of Hindu Religion, purification of world's, ideas and religious books of different faith the Vedas, equelity, fraternity and democracy in individual as well as in social and political life, devotion to God, philosophy, literature and character building, is unparalleled. Arya Samaj is following the path laid down by the Great Rishi.

252 Chawpanagar- Gujar ki Thadi Jaipur

सर्दी का मौसम और हमारा भोजन

आयुर्वेद विशेषज्ञों ने अपने ग्रंथों में मानव जाति को निरोग रखने के लिए ऋतुओं के अनुसार आहार-विहार व दिनचर्या का विस्तृत व लाभदायक रूप से वर्णन किया है। हमारे पूर्वज इन सब बातों पर बहुत ध्यान रखते थे कि कौनसी ऋतु में स्वास्थ्य की दृष्टि से क्या खाना, क्या न खाना उचित है। साथ में इस पर भी नजर रखते थे कि बालकों, युवाओं, वृद्धों, स्त्रियों, पुरुषों तथा गर्भवती को क्या व कौनसा पदार्थ लेना है। परन्तु समय के साथ संयुक्त परिवारों का चलन कम हो गया और एकल परिवारों को इसका समुचित ज्ञान न होने के कारण पथ्य-अपथ्य जो भी अच्छा लगता है खाने में संकोच नहीं करते हैं। सर्दी में ठंडी आइसक्रीम व पेय पदार्थ जैसी वस्तुओं का भी घड़ल्ले से उपयोग करते हैं।

शीतकाल के प्रभाव-

शीतकाल में सूर्य की किरणें तिरछी पड़ने के कारण हमारा बाहरी वातावरण बहुत ठंडा हो जाता है जिसके प्रभाव से हमारे शरीर के रोमकूप सिकुड़ जाते हैं, जिसके कारण शरीर की गर्मी बाहर नहीं निकल पाती। अतः अंदर की गर्मी बढ़ जाने के कारण हमारी जठराग्नि (पाचनशक्ति) तेज हो जाने के कारण भारी व गरिष्ठ खाद्य पदार्थों को पचाने में पूर्ण सक्षम हो जाती है। फलस्वरूप उनका रस भी अच्छा बनता है और अधिक रस बनने से रक्त, मांस मज्जा आदि का अच्छा विकास होकर शरीर निरोग बनता है। इस मौसम में रातें बड़ी व दिन छोटे होते हैं। अतः रात्रि में किया हुआ भोजन रात में ही पच जाता है। अतः शीतकाल में प्रातः के नाश्ते में गरिष्ठ पाक, लड्डू, दूध, मलाई, मेवा, हलुआ लिया जा सकता है। किन्तु मधुमेह, हृदयरोगी, मोटापाग्रस्त आदि रोगियों को इनसे बचना चाहिए। उनके लिए बाजरे का दलिया व थोड़ा गुड खा लेना ही उपयोगी है।

आहार-विहार- शीत ऋतु में पालक, मूली, पत्ता गोभी, प्याज पत्ती, गाजर, आलू-टमाटर, लौकी, मेथी, शलजम, चुकन्दर, अरबी, कच्ची हल्दी तथा ग्वारपाठे का सेवन बड़ा लाभदायक रहता है। खट्टी-मिट्ठी चटनियाँ, मैदा, सूजी, गन्ने से बने पदार्थ, आँवला

मुरब्बा व बल करने वाले टॉनिक, रस-रसायन, लेह, चटनी, चूर्ण, पाक, सूखे मेवे आदि का उचित प्रयोग भी सुडौल शरीर की रचना के लिए उपयोगी है। सफेद तिल, मूँगफली थोड़े से गुड़ के साथ व आँवले का मुरब्बा सस्ते पदार्थों की श्रेणी में अच्छे उपयोगी माने गये हैं।

सूखे मेवे जो कि अनेक तत्व लिए हुए हैं। आयरन, फाइबर, जिंक, मिनरल आदि से भरपूर होते हैं व हमारे शरीर के अलग-अलग अवयव के लिए उनकी अलग भूमिका रहती है। अखरोट मस्तिष्क के लिए, बादाम हृदय के लिए व याददाश्त को बढ़ाने में, अंजीर दूध के साथ लेने पर कब्ज को मिटाता है। इस प्रकार इन सभी का उपयोग अपनी-अपनी विशेषता लिए हुए होता है और इस मौसम में काफी उपयोगी माने गये हैं किन्तु इनकी भी मात्रा ज्यादा नहीं लेनी चाहिए। दिन भर में सभी को मिलाकर एक मुट्ठी भरकर खा सकते हैं।

भोजन के समय कैसा हो वातावरण?अध्यात्म में भोजन के महत्व पर विशेष ध्यान दिया है। अगर ऋतु के अनुसार भोजन नहीं किया जाता है तो हमारा सूक्ष्म शरीर उसे स्वीकार नहीं करता और स्वास्थ्य बिगड़ जाने का खतरा उपस्थित हो जाता है। यह बात याद रखें कि जो आहार हम करते हैं उसमें से एक चौथाई से मन बनता है, एक चौथाई से रक्त, शुक्र और एक चौथाई मल में जाता है। हमको मन, रक्त और शुक्र की रक्षा करनी है और मल का परित्याग करना होता है। हमारे शास्त्रों में सूक्ष्म विवेचन किया है। शास्त्रों के सिद्धांत हमें अनुभूति में उतारने चाहिए। इनका बड़ा मनोवैज्ञानिक कारण भी है।

Attempt On Line Test
Win Rs. 5100/-
Log on www.satyarthprakashnyas.org

भोजन और भजन के समय साधक का प्राणबल सतेज हो जाता है, तो वातावरण के जो अणु होते हैं, वह उसके पास खिंचे चले आते हैं। इसलिए हमारे ऋषियों ने जो कहा उस पर ध्यान देना चाहिए कि भोजन के समय वातावरण शुद्ध हो।

- डॉ. हीरालाल छाजेड़ ''जैन'', कटक

('नव सेवा सरोज' से साभार)

एक टोकरी-भर मिट्टी

किसी श्रीमान् जमींदार के महल के पास एक गरीब अनाथ विधवा की झोंपड़ी थी। जमींदार साहब को अपने महल का हाता उस झोंपड़ी तक बढ़ाने की इच्छा हुई। विधवा से बहुतेरा कहा कि अपनी झोंपड़ी हटा ले, पर वह तो कई जमाने से वहीं बसी थी। उसका प्रिय पति और इकलौता पुत्र भी उसी झोंपड़ी में मर गया था। पतोहू भी एक पाँच बरस की कन्या को छोड़कर चल बसी थी। अब यही उसकी पोती इस बुढ़ापे में एकमात्र आधार थी। जब कभी उसे अपनी पूर्वस्थिति की याद आ जाती तो मारे दुःख के फूट-फूटकर रोने लगती थी। और जबसे उसने अपने श्रीमान् पड़ोसी की इच्छा का हाल सुना, तब से वह मृतप्राय हो गयी थी। उस झोंपड़ी में उसका मन लग गया था। वहाँ से वह निकलना ही नहीं चाहती थी। श्रीमान् के सब प्रयत्न निष्फल हुए। तब वे अपनी जमींदारी चाल चलने लगे। बाल की खाल निकालने वाले वकीलों की थैली गरम कर उन्होंने अदालत के माध्यम से झोंपड़ी पर अपना कब्जा कर लिया और विधवा को वहाँ से निकाल दिया। बिचारी अनाथ तो थी ही, पास-पड़ोस में कहीं जाकर रहने लगी।

एक दिन श्रीमान् उस झोंपड़ी के आसपास टहल रहे थे और लोगों को काम बतला रहे थे कि इतने में वह विधवा हाथ में एक टोकरी लेकर वहाँ पहुँची। श्रीमान् ने उसको देखते ही अपने नौकरों से कहा कि उसे यहाँ से हटा दो। पर वह गिड़-गिड़ाकर बोली कि ''महाराज, अब तो यह झोंपड़ी तुम्हारी ही हो गई है। मैं उसे लेने नहीं आई हूँ। महाराज क्षमा करें तो एक विनती है। जमींदार साहब के सिर हिलाने पर उसने कहा कि ''जब से यह झोंपड़ी छूटी है तब से मेरी पोती ने खाना-पीना छोड़ दिया है। मैंने बहुत कुछ समझाया, पर यह एक नहीं मानती। यही कहा करती है कि अपने घर चल, वहीं रोटी खाऊँगी। अब मैंने सोचा है कि उस झोपड़ी में से टोकरी भर मिट्टी लेकर उसी का चूल्हा बनाकर रोटी पकाऊँगी। इससे भरोसा है कि वह रोटी खाने लगेगी। महाराज, कृपा करके आज्ञा दीजिए तो इस टोकरी में मिट्टी ले जाऊँ।'' श्रीमान् ने आज्ञा दे दी।

विधवा झोंपड़ी के भीतर गई। वहाँ जाते ही उसे पुरानी बातों का स्मरण हुआ और उसकी आँखों से आँसू की धार बहने लगी। अपने आंतरिक दुःख को किसी तरह सम्हालकर उसने अपनी टोकरी मिट्टी से भर ली और हाथ से उठा-कर बाहर ले आई। फिर हाथ जोड़कर श्रीमान् से प्रार्थना करने लगी कि '' महाराज कृपा करके इस टोकरी को ज़रा हाथ लगाइए, जिससे कि मैं उसे अपने सिर पर धर लूँ।'' जमींदार साहब पहले तो बहुत नाराज हुए, पर जब वह बार-बार हाथ जोड़ने लगी और पैरों पर गिरने लगी तो उनके भी मन में कुछ दया आ गई। किसी नौकर से न कहकर आप ही स्वयं टोकरी उठाने आगे बढ़े। ज्यों ही टोकरी को हाथ लगाकर ऊपर उठाने लगे त्यों ही देखा कि यह काम उनकी शक्ति के बाहर है। फिर तो उन्होंने अपनी सब ताकत लगाकर टोकरी को उठाना चाहा पर जिस स्थान पर टोकरी रखी थी, वहाँ से वह एक हाथ-भर ऊँची न हुई। वह लज्जित होकर कहने लगे, ''नहीं, यह टोकरी हमसे न उठाई जावेगी।''

यह सुनकर विधवा ने कहा, '' महाराज! नाराज न हों, आप से तो एक टोकरी भर मिट्टी नहीं उठाई जाती और इस झोंपड़ी में तो हजारों टोकरियाँ मिट्टी पड़ी है। उसका भार आप जन्म-भर क्योंकर उठा सकेंगे? आप ही इस बात पर विचार कीजिए!''

जमींदार साहब धन-मद से गर्वित हो अपना कर्त्तव्य भूल गए थे, पर विधवा के उपर्युक्त वचन सुनते ही उनकी आँखे खुल गईं। कृतकर्म का पश्चाताप कर उन्होंने विधवा से क्षमा माँगी और उसकी झोंपड़ी वापस दे दी।

संकलन- नारायण लाल मित्तल, उदयपुर

आदित्य ब्रह्मचारी महर्षि दयानन्द के अतुल्य बल का प्रमाण

Title Verification - RAJHIN16158/20/1/2012-TC

स्वत्वाधिकारी, श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, उदयपुर की ओर से प्रकाशक, मुद्रक अशोक कुमार आर्य द्वारा चौधरी ऑफसेट प्रा. लि., 11/12 गुरुरामदास कॉलोनी, उदयपुर से मुद्रित तथा कार्यालय श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास नवलखा महल गुलाबबाग, महर्षि दयानन्द मार्ग, उदयपुर-313001 से प्रकाशित, सम्पादक-अशोक कुमार आर्य